चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
50
8

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

स्वाधीनता के प्रतीक

प्रेषिका :
कुमारी प्रमीला सिंह, बम्बई

ज़ोर से चल रहा है!
ए.वी.एम
भाभी
आंसुओं और कहकहों से भरपूर एक घरेलू कहानी
AVM
PRODUCTIONS
राजेन्द्र कृष्ण
कृष्णन पंजु
चित्रगुप्त

चन्दामामा

जनवरी १९५८

प्रसाद प्रोडक्शन्स
मद्रास
अभिनेता
राज कपूर • मीना कुमारी • श्यामा
शारदा
संगीत
सी. रामचन्द्र
दिग्दर्शक
प्रसाद
गीत
राजेन्द्र कृष्ण

ये लक्षण...

- पेट बढ़ जाना
- भूख न लगना
- चिड़चिड़ापन
- पेट बिगड़ जाना
- हलका बुख़ार आदि

इस बात के प्रधान चिह्न हैं कि आपके बच्चे को जिगर और तिल्ली की शिकायत है। जम्मी से सलाह लीजिए और उनके विशाल अनुभव का लाभ उठाइए।

जम्मीका

लिवरक्योर

बच्चों की जिगर व तिल्ली की बीमारी के लिए

जम्मी के डाक्टर हर महीने सब प्रमुख शहरों का दौरा करते हैं। उनके कार्यक्रम की सूचना प्राप्त कीजिए।

जम्मी वेंकटरमैया एण्ड सन्स
प्रधान कार्यालय: मद्रास
शाखाएँ: बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, अहमदाबाद, नागपुर, बंगलोर, विजयवाड़ा, तिरुचिरापल्ली, और कुम्भकोणम

सफेद बालोंको श्याम बनाईये.

लोमा

दिमागको ठंडक पहुंचानेवाला सुमधुर सुवासित सर्वोत्तम केशतेल.

सोल अेजन्टः फोन 51802
अेम. अेम. खंभातवाला
रायपुर - अहमदाबाद -

मुँह की सुन्दरता के लिए
सी.एस.सरोजा
Remy
BORATED
TALCUM POWDER
Remy
SNOW
रेमि स्नो और पाउडर

बच्चों के खेल के लिए . . .

. . . . यही स्थान खेल का मैदान है। समझदार माता-पिता अपने बच्चों में खेल के मैदान का उपयोग करने की अच्छी आदत डालते हैं, न कि सड़कों पर खेलने की।

बच्चों के विकास के लिए दूसरी अच्छी आदत है खाने की।

स्वास्थ्यपूर्ण ढंग से भुने हुए पके गेहूं, माल्ट, ग्लूकोज, दूध आदि से तैयार

जे. बी. मंघाराम एण्ड कम्पनी
ग्वालियर

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

चन्दामामा अभीतक बहुत दूर—मनुष्यों की पहुँच के बाहर था—करीब करीब ढाई सौ लाख मील दूर।

लोग उसको कवितायें सुनाते थे। उसके सपने देखते थे, कहानियाँ कहते सुनते थे उसके बारे में बहुत कुछ मालूम था, पर बहुत कुछ ऐसा भी था, जो मनुष्य के ज्ञान के परे थे।

अब मालूम होता है निकट भविष्य में मनुष्य चान्द तक पहुँच सकेगा। रूस ने अभी अभी दो "चान्दों" का आविष्कार किया है, जो भूमि की परिक्रमा कर रहे हैं।

यदि ये परीक्षण सफल हुए तो चन्दामामा और हमारी भूमि के मध्य यातायात का मार्ग बन जायेगा। चन्दा भी समीप आ जायेगा।

वर्ष : ९ जनवरी १९५८ अंक : ५

मुख - चित्र

सुशर्मा के दक्षिण में गौवों के पकड़ते ही, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शकुनि दुश्शासन, अश्वत्थामा, आदि को, अपनी सेना के साथ लेकर दुर्योधन निकला। उन्होंने मत्स्यदेश के उत्तर में छः हजार गौवें पकड़ लीं।

वहाँ के गौ पालक भागे भागे विराटनगर गये। स्त्रियों के मध्य, विराट राजा के लड़के, उत्तर कुमार को बातें करता देख, उसको उन्होंने सारी बात सुनाई। "महाराज, अब आप ही रक्षा कर सकते हैं। आप तुरत आइये। कौरवों से युद्ध करके हमारी गौवों को बचाइये।" यह सुन उत्तर ने कहा—"अरे अरे, उसके लिए तो मेरा पास अच्छा सारथी नहीं है। अगर होता तो मैं भी अर्जुन की तरह उनसे लड़ता और उनको परास्त करता।"

यह सुनते ही द्रौपदी ने कहा—"महाराज, हमारी बृहन्नला कभी अर्जुन की सारथी थी। अगर आप उसको साथ ले गये तो कौरवों को आप आसानी से जीत सकेंगे।"

उत्तर ने अपनी बहिन उत्तरा को भेजकर नर्तनशाला से बृहन्नला को बुलवाया। बृहन्नला ने कहा—"राजा मैं गा सकती हूँ, नाच सकती हूँ, मैं भला रथ कैसे चलाऊँगी!

"नाच गाने की बात तो बाद में करना पहिले रथ तैयार करो। यह लो, इस कवच को पहिनो"—उत्तर ने बृहन्नला को एक कवच दिया। बृहन्नला ने उसको अपने शरीर पर इस तरह ओढ लिया, जैसे उसे पहिनना ही न आता हो। वहाँ बैठी स्त्रियाँ हँसी। उत्तर ने स्वयं बृहन्नला को कवच पहिनाया।

उत्तर ने धनुष बाण लिए, रथ पर सिंह ध्वजा फहराई। बृहन्नला को साथ लेकर रथ पर चढ गया। उत्तरा ने बृहन्नला से कहा—"युद्ध में जीतकर लौटते समय, मेरे गुड़ियाओं के लिए अच्छे अच्छे कपड़े लेते आना।"

"अगर तुम्हारा भाई युद्ध में जीत गया तो जरूर लेकर आऊँगा।" बृहन्नला ने यह कह कर घोड़े चलादिये।

गूँगा

ब्रह्मदत्त जब काशी का राजा था मद्र देश की राजकुमारी चन्द्रा देवी उनकी बड़ी रानी थी। विवाह के बाद बहुत वर्ष बीत गये पर उनके कोई सन्तान न हुयी। प्रजा ने जाकर राजा से कहा कि वे व्रत वगैरह करें ताकि उनके सन्तान हो और उन्हें युवराज मिले।

चन्द्रादेवी ने अनेक व्रत किये, पूर्णिमा के दिन उन्होंने उपवास रखा। उन्होंने सोचा—"अगर मैं शीलवती हूँ तो मुझे पुत्र-प्राप्ति हो।"

देवताओं के राजा इन्द्र ने उनकी इच्छा पूरी करने का निश्चय किया। और जब वे सोचने लगे की किसको उनका पुत्र बनाकर भेजा जाये तो उन्हें बोधिसत्व याद आये।

पहिले भी बोधिसित्व काशी के राजा के रूप में पैदा हुए थे। उन्होंने बीस वर्ष राज्य भी किया था। उस समय में उन्होंने कई पाप किये। उनके प्रायश्चित्त केलिये अस्सी हजार वर्ष नरक में काटने पड़े। फिर वे देवलोक में गये। वहाँ उनकी अवधि समाप्त हो रही थी और वे गन्धर्व लोक जाने की तैयारी कर रहे थे।

इन्द्र ने उस समय बोधिसत्व के पास जाकर कहा—"मित्र यदि तुमने मानव लोक में फिर जन्म लिया तो तुम कई पुण्य तो कर ही सकोगे, और मानव जाति का उद्धार भी कर सकोगे। काशी के राजा की पत्नी चन्द्रादेवी पुत्र-प्राप्ति के लिये कितने ही व्रत कर रही हैं। उनके लड़के के रूप में पैदा होओ।" बोधिसत्व इसके लिये मान गये।

बोधिसत्व के चन्द्रादेवी के गर्भ में प्रवेश करते ही, ठीक उसी समय

उनके पांच सौ अनुचरों ने काशी राजा के अनुचरों की पत्नियों के गर्भ में प्रवेश किया।

यथा समय बोधिसत्व कई शुभ लक्षणों के साथ, चन्द्रादेवी के गर्भ से पैदा हुये। उसी समय बाकी पाँच सौ भी पैदा हुये। राजा ने आज्ञा दी कि उन सब का भी, उसके लड़के के साथ पालन-पोषण हो। अपने लड़के को दूध देने केलिए उसने चौंसठ दासियों को नियुक्त किया। फिर उसने जाकर अपनी बड़ी रानी से कहा—"जो वर तुम चाहो, माँगो।" उसने कहा—"जब समय आयेगा, तब माँगूँगी।"

पुत्र का नामकरण संस्कार किया गया। उसका नाम तेमिय रखा गया। उस समय राज पुरोहितों से पूछा गया—"क्या लड़के को कभी अशुभ होने की आशंका है?" उन्होंने लड़के को देख-दाख कर कहा—"राजा! इस लड़के के बारे में किसी भय की जरूरत नहीं। यह चिरंजीवी है।"

जब तेमिय एक महीने का हुआ तो उसको सजा कर—दरबार में, राजा के पास ले जाया गया। राजा अपने लड़के को गोदी में बिठाकर खिलाने लगा। उस समय चार चोरों को न्याय के लिए उनके सामने पेश किया गया। राजा ने उनके अपराध पर विचार किया। एक को उन्होंने हजार कोड़ों की सजा दी, दूसरे को आजीवन कारावास की सजा दी। तीसरे को भालों से मार देने के लिए कहा। और चौथे को फाँसी का दण्ड दिया।

बोधिसत्व को तो पूर्व जन्म का ज्ञान था ही उन्होंने यह सब देखकर सोचा—"क्यों कि मेरे पिता राजा हैं, इसीलिये तो

वे ऐसे काम करके स्वयं नरक मोल ले रहे हैं।—मैंने पहिले बीस साल राज्य किया, और उसके बदले में, अस्सी हज़ार वर्षों का नरकवास भुगता। फिर क्यों यों इसी चोर के वंश में पैदा हुआ हूँ! मेरे पिता बिना यह जाने कि वे स्वयं चोर हैं इन चारों चोरों को इतनी कड़ी सज़ा दे रहे हैं। यदि मैं राजा बन गया तो मुझे फिर नरक जाना पड़ेगा।"

तब से वह विचार करने लगा कि उस चोर के जीवन से कैसे मुक्त हो। उनका सुनहरा शरीर मुरझा-सा गया। तब उन्हें उनकी पूर्वजन्म की माँ ने प्रत्यक्ष होकर कहा—"घबराओ मत। बेटा, यदि तुम इस जीवन से बचना चाहते हो तो ऐसा दिखाओ कि तुम गूँगे हो, बहरे हो। बावले हो। बेअक्ल हो।"

तेमिय ने उसकी सलाह मानने का निश्चय किया।

राजा की आज्ञा के अनुसार शेष पाँच सौ लड़कों के रहने का प्रबन्ध भी वहीं किया गया, जहाँ बोधिसत्व रहा करते थे। वे भूख लगते ही दूध के लिये रोते। केवल बोधिसत्व न रोते। उन्होंने सोचा—"नरक जाने से तो अच्छा यह है कि आदमी भूखा मर जाये।"

दासियों ने आकर रानी से शिकायत की कि राजकुमार दूध के लिये न रोता था। रानी ने यह बात राजा से कही। राजा ने ब्राह्मणों को बुलवाकर उनकी सलाह ली।

"बच्चे का दूध के लिए रोना आवश्यक नहीं है। ठीक समय पर अगर उसे दूध दिया गया तो वह गटागट पी जायेगा।" ब्राह्मणों ने कहा। दासियाँ वैसा ही करती रहीं। और यदि जान बूझ कर कभी कभी दूध देना छोड़ देतीं, तो भी बच्चा न

रोता। यह देख उन्हें आश्चर्य होता। यही नहीं, वह और बच्चों की तरह हाथ पैर हिला कर न खेलता, न किल्कारियाँ भरता। उसके मुख से कोई भी आवाज न आती। अगर कोई चुटकी बजाता तो उसे भी वह न सुनता। इसका कारण क्या था, किसी को भी न मालूम था।

इस तरह एक साल बीत गया। एक बार दासियों ने मिठाइयाँ लाकर बच्चों के सामने रखी, और यह देखने के लिए कि क्या होता है, वे आड़ में छुप गईं। बच्चों ने खूब मिठाई खाई। एक दूसरे की छीनकर खाई। पर तेमिय ने कुछ न खाया, उसने खाने की चाह भी प्रकट की। यह देख रानी बड़ी दुःखी हुई। उसने अपने हाथ से उसके मुख में मिठाई रखकर कहा—"बेटा, खाओ।"

पाँच वर्ष बीत गये। पाँच वर्ष के बच्चों को अग्नि का भय मालूम होने लगता है। यह जानने के लिए कि तेमिय अग्नि देखकर डरता है कि नहीं, राजा ने एक बड़ा झोंपड़ा बनवाया। उस पर ताड़ के पत्ते डलवाये। उसमें सब बच्चों को रखा। फिर उस झोंपड़े में आग लगवा दी गई। आग देखते ही बाकी सब पाँच सौ बच्चे भाग गये। परन्तु तेमिय यह सोचकर खड़ा रहा—"नरक भुगतने से तो यही अच्छा है। इस अग्नि में मरना ही अच्छा है।" जब आग उसके पास आने लगी, तो उसे कोई उठाकर बाहर ले गया।

तेमिय सात वर्ष का हुआ। कुछ साँपों के दान्त निकालकर, उनके मुँह बन्द करके, उनको लड़कों के रहने की जगह छोड़ दिया गया। बाकी सब तो डर गये, पर तेमिय जहाँ बैठा था, वहीं बैठा रहा। साँप उसके शरीर पर चढ़ गये। उनके सिर

पर चढ़कर, फण फैलाकर नाचने लगे। तब भी वह न हिला। इस तरह कई तरह से उसकी परीक्षा की गई।

उसके पैरों में कोई कमी न थी। कान, मुख आदि भी जैसे होने चाहिये थे, वैसे थे। कोई भी यह न जान सका कि वह क्यों नहीं हिलता था। क्यों नहीं बोलता था। बच्चों के मनोरंजन के लिए नाटक खेला गया। नाटक देखकर और बच्चे तो हँसे, पर तेमिय न हँसा। एक तलवार लेकर, नाचता नाचता—"कहाँ है वह राजकुमार! उसका शिरच्छेद करना है!" भयंकर आवाज में चिल्लाता चिल्लाता, तेमिय पर कूदा। और बच्चे भय से भाग गये। पर तेमिय बिल्कुल न हिला डुला। नाचने वाला, अपना नृत्य समाप्त करके चला गया।

कई तरह से, उन्होंने उसमें चेतना पैदा करने की कोशिश की। उसके चारों ओर यकायक शँख बजाये गये, ढोल, बजाये गये। उसके शरीर पर गुड़ का पानी डालकर मक्खियों से सताया गया। कई दिन उसे बिना नहलाये-धुलाये रखा। उसके शरीर से बू निकलने लगी। सब उसको चिढ़ाने लगे—"यह क्या! उठकर क्यों नहीं नहाते धोते! साफ़ रहना चाहिये, क्या तुम इतना भी नहीं जानते! आखिर उसके पलँग के नीचे आग रखी गई। उसके शरीर पर छाले पड़ गये। "उस अग्नि से तो यही अग्नि अच्छी है।" उसने सोचा।

भले ही उसमें कोई परिवर्तन न हुआ हो, पर अपने इकलौते लड़के को देखकर, माता-पिता शोकातुर हो गये। उन्होंने सब परीक्षायें बन्द कर दीं। उन्होंने अपने लड़के से कहा—"बेटा! तुम में कोई भी कमी नहीं है। हम यह जानते हैं।

कितने ही व्रत करके तुझे पाया है। तेरा इस तरह दु:मुही साँप की तरह पड़ा रहना, हमारे लिए बहुत अपमानजनक है। उठो। और औरों की तरह घूमो फिरो, बेटा।" उन्होंने कई बार यह कहा। पर कोई फायदा नहीं हुआ।

तेमिय के सोलह वर्ष पूरे हो गये। "भले ही कोई लँगड़ा हो, लूला हो, गूँगा हो, बहरा हो, पर सयाना हो जाने पर उसमें काम-वासना पैदा होती है। इसलिए लड़के को आकर्षित करने के लिए नर्तकियों को नियुक्त करता हूँ। जब वे उसके चारों ओर नाचेंगी तो सम्भव है कि कोई न कोई उसे आकर्षित करे। जो इस तरह आकर्षित कर सकेगी उसको उसकी रानी बना दूँगा।" राजा ने कहा।

तेमिय को गुलाब जल से नहलाया गया। अच्छे कपड़े पहिनाये गये। सुन्दर महल में मोटे गद्दों पर उसे लिटाया गया। उस महल में सब जगह इत्र रखे गये। अगर बत्तियाँ जलाई गईं। मद्य आदि, पेय रखे गये। वहाँ कई नाचनेवाली युवतियाँ गईं। उन्होंने अपने नृत्य व संगीत से राजकुमार का मन आकर्षित करने के लिए जीतोड़ प्रयत्न किया। परन्तु वह यह सोचकर न जाने उनके सामने साँस भी ले तो क्या होगा साँस रोक कर बैठा रहा, मानों कोई लकड़ी हो। आखिर, युवतियाँ उब उठीं। उन्होंने राजा के पास जाकर कहा, "आपका लड़का मनुष्य नहीं, राक्षस मालूम होता है। हम पास गये कि वह घबरा-सा गया।"

इस तरह सोलह वर्ष तक किये गये प्रयत्न निष्फल निकले। तेमिय क्यों ऐसा था, कोई न जानता था।

[अभी और है]

[१२]

[भाइयों के कहने पर, पिंगल ने जहाज के कप्तान का अपने घर में आतिथ्य करना स्वीकार कर लिया। अपनी चाल के अनुसार पिंगल को बाँधकर कप्तान अपने जहाज पर ले गया। दोनों भाई घर वापिस गये। माँ को खूब मारा पीटा। पिंगल के लाये हुये धन को तो लिया ही, उसके थैले को भी हथिया लिया।]

जीवदत्त और लक्षदत्त ने जब पिंगल की लाई हुई थैली खोली तो उसमें कितना ही सोना था, कितने ही कीमती कीमती मोती हीरे थे, वे उनको देख कर बेहोश होते होते बचे। उनका ख्याल था कि पिंगल थोड़ा बहुत ही कमा कर लाया था। पर वे यह कल्पना भी न कर पाये थे कि वह कमाई इतनी थी और इसतरह की थी। वे अचरज में थे।

"इस धन से हमारी गरीबी तो गायब होगी ही, सात पीढ़ियों तक गरीबी का नामो निशान भी देखने को न मिलेगा।" जीवदत्त कहता कहता हंसा।

"हाँ! भैया, अगर अवन्तीपुर के राजा को मालूम हो गया कि हमारे पास इतना धन है तो वह अपने मन्त्री को लेकर अपनी लड़की की शादी की बातचीत हमसे करने हमारे घर आयेगा।" लक्षदत्त ने कहा।

दोनों लड़कों को इसतरह आपस में बातें करता देख, माँ में अत्यन्त प्रेम उमड़ आया। वह यह भूल गई कि तबतक वे दोनों उसको बुरा भला कह रहे थे। उसने उनसे कहा—"अच्छा, बेटो, अब तुम एक काम करो—पहिले की तरह अब सारा धन बरबाद न कर देना। शादी करके, अपना घरबार बसाओ। मैं भी तुम्हारे साथ रहती अपना समय बिताऊँगी।"

माँ के यह कहते ही दोनों लड़के, नागों की तरह फुँकारते हुए उठे—"हम चाहेंगे तो शादी करेंगे, नहीं तो बैरागी बने फिरेंगे। तुझे क्या! हम जानते हैं कि तुझे हम पर बिल्कुल प्रेम नहीं है।—तेरा सब कुछ, लाड़ला पिंगल ही तो है। झूटी-मूटी बातें बनाकर अब तुम हमारे पिता की दौलत में हिस्सा बँटाने की सोच रही हो। क्यों?"

"वह तुम्हारे पिता की कमाई हुई दौलत नहीं है। वह पिंगल की अपनी, निज की कमाई है। तुम उसे उठाकर ले ही जा रहे हो इसलिये मैं कुछ नहीं कह सकती। मैं तो सिर्फ़ यही चाहती हूँ कि वह जादूवाली थैली मुझे देते जाओ। यदि वह मेरे पास रही तो जब कभी जो कुछ खाने को चाहूँगी, वह ले लिया करूँगी। मुझे कौर कौर के लिए घर घर भीख माँगने की जरूरत न होगी।" माँ ने अपने दोनों लड़कों से कहा।

"तू मेरी माँ ही नहीं है। उस हालत में अगर तू भीख भी माँगे तो मुझे क्या?" जीवदत्त ने तंग आकर कहा।

"हाँ! भाई, यह हमारी माँ कैसे होगी, जब पिता की कमायी हुई दौलत अपने छोटे लड़के के लिए छुपाये रखी हुयी है?" लक्षदत्त ने कहा।

माँ ने सोचा कि उनसे बातचीत करने का कोई फ़ायदा न था। वह एक कोने में जाकर बैठ गई। जीवदत्त और लक्षदत्त ने पिंगल के लाये हुये धन को आपस में दो हिस्सों में बाँट लिया फिर जादूवाली थैली के बारे में हपड़-झपड़ शुरू हुई। दोनों भाई उस थैले को लेना चाहते थे। बात इतनी बढ़ी कि दोनों एक दूसरे की जान के पीछे पड़ गए। माँ ने उन दोनों के पास जाकर कहा।

"बेटो! तुम आपस में लगड़ झगड़ कर एक दूसरे का नुक्सान न करो। भले ही तुम मुझे सताओ पर यह मैं कैसे भूल सकती हूँ कि तुम मेरे लड़के हो! वह थैला मेरे पास रख दो—तब ऐसी कोई बात न रह जायेगी, जिस पर तुम झगड़ सको।"

"थैले में मैं अपना हिस्सा लेकर रहूँगा।"—कहता कहता जीवदत्त रसोई से चाकू लेने गया। पर माँ ने उसे रोक कर कहा—"बेटा! जीवदत्त! वह न करो। एक बार तुमने उसके टुकड़े किये कि नहीं कि उसका जादू चला जायेगा। उसका किसी न किसी को उपयोग करना

होगा। टुकड़े करने से कोई फायदा नहीं।"

"यह बात है तो यह थैला मुझे ही चाहिये।" लक्षदत्त ने कहा।

"जा, जा, मैं घर में सबसे बड़ा हूँ, बड़ा लड़का हूँ—इसतरह की चीज़ें शास्त्रों और पुराणों में भी लिखा है बड़े लड़के को ही मिलनी चाहिये।" जीवदत्त ने कहा।

इसतरह दोनों भाइयों का लड़ना झगड़ना अवन्तीपुर के एक सरदार ने, जो शहर में गश्त लगा रहा था, सुना, वह धन और थैले के बारे में सब कुछ

जान गया। वह सवेरे सवेरे राजा के महल में गया। उसने राजा को सारा हाल बता दिया।

अवन्ती नगर का राजा तो यूँ ही बड़ा कँजूस था और उसे जब यह मालूम हुआ तो उसे बड़ा लालच हुआ। उसने अपने कोतवाल को बुलाकर हुक्म दिया कि उन भाइयों को और उनके घर की सभी चीज़ों को, मय झाड़, बुहारी के पकड़ लिया जाय, और ज़ब्त कर लिया जाय।

कोतवाल सिपाहियों को साथ लेकर गया। उसने जीवदत्त और लक्षदत्त को पकड़ लिया। फिर उन्होंने सारे घर की तलाशी ली। उन्हें थैली तो मिली ही। बाकी सब चीज़ों को उठवाकर वे राजमहल ले गये।

जीवदत्त और लक्षदत्त ने राजा को बताने से इनकार कर दिया कि असल में क्या बात थी। परन्तु जब सिपाहियों ने उनको पाँच सात कोड़े मारे तो उन्होंने शुरू से अन्त तक सारी कहानी रोते धोते सुना दी।

"यानि यह तुम्हारी दौलत नहीं है!"—राजा ने, खुशी खुशी हँसते हुये पूछा। "अगर किसी चीज़ का कोई हक्दार न हो तो कानून के मुताबिक वह चीज़ मेरी हो जाती है। तुमने अपने भाई पिंगल को गुलाम के रूप में बेच दिया है। इसलिये उसको किसी प्रकार के कोई अधिकार नहीं हैं। और अब तुम्हारी बात! क्यों कि तुमने उसकी धन दौलत को चोरी चोरी आपस में बाँटने की कोशिश की है इसलिये मैं तुम्हें २० साल की कैद की सज़ा देता हूँ।"

"....महाराज! हमें कृपाकर के रिहा कीजिये। न हम वह धन चाहते हैं, न

वह थैला ही। हमें जहाँ मर्जी वहाँ घूमने की छूट दीजिये। हमारे लिये यही काफ़ी है।" जीवदत्त और लक्षदत्त ने कहा। पर राजा उन्हें छोड़ना न चाहता था। ऐसा वह करता तो लोगों में जाकर वे उसकी बदनामी करते, कहते कि उसने अन्याय किया है। जनता में उसके प्रति थोड़ा बहुत असन्तोष फैल्ता।

"तुम अपने अपराध को स्वीकार कर ही रहे हो और यह भी मान रहे हो कि तुमने अपनी माँ को सताया है—इसलिये तुम्हें जेल भुगतनी ही पड़ेगी। मगर मैं तुम्हारी माँ के जीवन निर्वाह के लिए, महावार दस मुहरों का प्रबन्ध कर रहा हूँ।" राजा, यह फैसला देकर, अपने बगीचे में चला गया। सैनिकों ने लक्षदत्त और जीवदत्त के पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं—बेड़ियों को मोटे मोटे लोहे के गोलों से बाँध दिया।

उनको ले जाकर जेल की एक काल कोठरी में डाल दिया और बाहर से दरवाजे पर मोटा ताला लगा दिया।

दोनों भाई अपनी हालत पर रोने लगे। तब उन्हें पश्चात्ताप हुआ कि उन्होंने भाई

और माँ को धोखा दिया था। पर वे अब करते भी तो क्या करते! काले, बदबूवाले, सड़े, सीलन वाले फर्श पर पड़े पड़े, उस नरक में, रोते रोते आखिर वे सोगये।

* * *

भाइयों के धोखे से पिंगल को जहाज के सरदार का गुलाम बनना पड़ा था न! उस कप्तान ने पिंगल को उस जगह जंजीरों से बाँध दिया, जहाँ बैठकर गुलाम चप्पू चलाया करते थे। उसके साथ और भी गुलाम थे। सवेरे, सवेरे जहाज ने लंगर उठाया। कप्तान

की आज्ञा होते ही गुलाम जहाज को समुद्र में ले गये।

वह कप्तान ऊपर से तो सज्जन मालूम होता था पर था वह बदनाम समुद्री डाकू। बहाना यह था कि वह माल एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह तक ले जाता था। वह बन्दरगाह पर देखता कि किस जहाज पर क्या चीज लादी जा रही थी। फिर उस जहाज को समुद्र में जाते हुये रोकता और उसे लूटता। जिन जहाजों को लूटता, उनको डुबाकर समुद्र के हवाले कर देता। अगर उस जहाज में कोई जिन्दा बचता, तो उसे डर था, कि वे असलियत बाहर कर देते।

गुलामों के साथ चप्पू चलाते चलाते पिंगल ने भल्लूकेतु के बताये हुये मन्त्र को बहुत याद करने की कोशिश की। बहुत माथा पच्ची की पर वह मन्त्र याद न आया। कैसे धोखा देकर उसके भाइयों ने किस तरह उसको कप्तान को बेच दिया था—जब वह यह सोचता तो खौल उठता। पिंगल जान गया कि क्योंकि वह उन्हें रोकने के लिए अपने घर नहीं था इसलिये वे अवश्य माँ को बुरी तरह सता रहे होंगे।

इस गुलामी से कैसे निकला जाय! पिंगल रात दिन यह सोचता रहता। एक दिन अचानक, समुद्र में एक बड़ा तूफ़ान चलने लगा—ऊँची ऊँची लहरों पर तूफ़ान में— जहाज इसतरह थपेड़े खा रहा था जैसे किसी भँवर में कोई सूखा पत्ता फँस गया हो। कप्तान खतरा ताड़ गया। वह अपने नौकरों चाकरों, गुलामों को हुक्म देता जहाज पर इधर उधर चहल कदमी करने लगा। उसी समय, कुछ दूरी पर एक जहाज समुद्र की ऊँची लहरों पर बुरी तरह डावांडोल हो रहा था। कप्तान ने दुर्बीन से उस जहाज की ओर देखा। वह बहुत बड़ा जहाज था। ऐसा जहाज, जो एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप जाता था। बड़े व्यापारियों के समुदाय का था वह जहाज। कप्तान जानता था कि उसमें बहुत-सा कीमती माल भरा हुआ होगा।

समुद्र में दो जहाज खतरे में फँसे हुये थे। नाविक, जहाजों को बचाने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे थे। कप्तान ने सोचा कि ऐसी हालत में उसने अगर जहाज को घेर लिया और उस पर छापा

मारा तो वह बहुत-सा माल लूट सकेगा। कप्तान के मन में यह लालच पैदा हुआ। उसके नौकर-चाकर इसतरह की खतरनाक परिस्थितियों के आदि थे। और जो उस जहाज में आदमी थे, वे समुद्र में जहाज चलाना तो जानते होंगे पर उन्हें समुद्र में युद्ध करने की आदत न होगी। यह उनका अनुमान था।

कप्तान ने यह सोचकर, अपने अनुचरों का आज्ञा दी। उस चिंघाड़ते तुफ़ान में भी वे तल्वार, भाले लेकर उस व्यापारी जहाज पर हमला करने के लिए तैयार हो गये।

पिंगल भी और गुलामों के साथ यथाशक्ति चप्पू चला रहा था। धीमे धीमे, जहाज, उस व्यापारी जहाज के पास जाने लगा। कप्तान, अपने निकट अनुचरों के साथ मस्तूल का सहारा लिये खड़ा था और दुर्बीन से व्यापारी जहाज की ओर देख रहा था। परन्तु वह यकायक भय के कारण चीख उठा।

"सब धनुष बाण छोड़ दो। जहाज को पीछे ले जाओ। यह व्यापारी जहाज नहीं है। वे जलती मशालों को बाणों पर बाँधकर हमारे जहाज पर छोड़ने जा रहे हैं।"

कप्तान अभी कह रहा था कि उस जहाज से जलती मशालों वाले बाण, पिंगल वाले जहाज में गिरने लगे। उनमें से कई मस्तूल के पास खड़े कप्तान के सैनिकों पर गिरे। उनके कपड़े जलने लगे। जहाज में हाहाकार मचने लगा। कप्तान पागल की तरह चिल्लाने लगा—"गुलामों को छोड़ दो। अब समय आ गया है जब कि उन्हें चप्पू छोड़कर तलवार पकड़कर, जहाज की रक्षा करनी होगी।" वह चिल्लाता जाता था। (अभी और है)

अलीबाबा

ईरान के एक नगर में दो भाई रहा करते थे। एक का नाम था कासिम और दूसरे का अलीबाबा। उनका पिता, दोनों को थोड़ी बहुत जमीन-जायदाद देकर गुजर गया था। कासिम ने धनी घराने में शादी की। व्यापार आदि, करके वह शीघ्र धनी हो गया। अलीबाबा की शादी गरीब घर में हुयी। वह लकड़ी बेचकर, जिन्दगी बसर करता। वह रोज़ जंगल जाता, लकड़ियां काटता और अपने तीनों गधों पर उन्हें लादकर शहर ले आता और वहां बेचता।

एक दिन जब अलीबाबा जंगल में लकड़ियाँ काट रहा था तो उसे दूरी पर धूल उड़ती दिखाई दी। वह धूल पास आती जाती थी। उसने गौर से देखा तो पता लगा कि कुछ आदमी घोड़ों पर सवार हो कर आ रहे थे। उसने अनुमान किया कि वे चोर हो सकते थे। वे चाहे कुछ भी हों, वह अपनी रक्षा के लिए, ऊँचे टीले के सबसे ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। अपने को पत्तों से ढ़क लिया। वह किसी को न दिखाई देता था पर वह सब कुछ नीचे बिल्कुल साफ़ साफ़ देख सकता था।

जल्दी घुड़सवार आकर उसी टीले के पास उतरे। उन सबने अपने घोड़े बाँध दिये और उनके मुखों पर दानों के थैले लटका दिये। जीन पर से भारी थैले उठाकर हाथ में ले लिये। अलीबाबा को लगा, हो न हो, उन थैलों में चान्दी सोने जैसी भारी चीजें थीं। उन चालीस आदमियों में एक सरदार था। उसने झाड़ियों में से, टीले के पास जाकर कहा—"तिल,

श्री सुमन कुमार जोशी

ये उन पर चढ़ गये। सरदार पहिले चला। उसके पीछे और।

यह सब अलीबाबा पेड़ पर से देख रहा था। चोरों के आखों से ओझल होने के बहुत देर बाद वह पेड़ पर से उतरा। उसने जानना चाहा कि अगर उसने भी वही शब्द कहे, जो चोरों के सरदार ने कहे थे, दरवाजा खुलता है कि नहीं! वह भी झाड़ियों में से होता हुआ पत्थर के दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो गया। उसने कहा—"दरवाजा खोल, तिल" दरवाजा फौरन खुल गया।

दरवाजा खोल।" उसके कहते ही पत्थर में एक दरवाजा-सा खुला। और चोरों के अन्दर चले आने के बाद सरदार भी अन्दर गया। फिर पत्थर पहिले की तरह अपनी जगह आ गया।

अलीबाबा को बहुत डर लगा। वह पेड़ पर से न उतरा। कुछ देर बाद, पत्थर का दरवाजा फिर खुला। चोरों का सरदार बाहर आया। औरों के बाहर आने के बाद "दरवाजा बन्द हो तिल" उसने कहा। दरवाजा तुरत बन्द हो गया। सबने अपने अपने घोड़े खोले।

अलीबाबा का ख्याल था कि अन्दर अन्धेरा होगा। परन्तु वहाँ उसे एक बड़ा कमरा दिखाई दिया, जो चमक-सा रहा था। ऊपर से कमरे में प्रकाश आ रहा था। कमरे में तरह तरह की चीज़ें थीं। रेशमी थान, ज़रीदार कपड़े, जेवर जवाहरात, सोने चान्दी के कलश और जाने क्या क्या चीज़ें रखी हुई थीं। यह सब देख, अलीबाबा ने सोचा कि न मालूम कितने वर्षों से चोर वहाँ रह रहे थे। वह हिम्मत करके अन्दर गया। और उसने उतना सोना इकट्ठा कर लिया जितना कि उसके गधे ढो सकते

थे। उसने उन्हें गधों पर लादा। और उन पर लकड़ियाँ डाल दीं। ताकि वह दिखाई न दे। बाहर आकर उसने कहा—"दरवाजा बन्द हो, तिल" तुरत दरवाजा बन्द होगया।

अलीबाबा अपने गधों को सीधे घर के पिछवाड़े में ले गया। घर के सब दरवाजे बन्द कर दिये। लकड़ियाँ हटाकर, वह सोने के थैले घर में ले गया। उसने उन्हें अपनी पत्नी के सामने रखा। उतना सोना देख उसकी पत्नी की आँखें चौंधिया गईं। उसने उसे सारा किस्सा सुनाया और कहा कि वह किसी को भी, उसके बारे में कभी कुछ न बताये।

उसकी पत्नी की खुशी का ठिकाना न था। उसने कहा कि वह उनको गिनेगी।

"अरे उन्हें गिनने के लिए तुम्हारी जिन्दगी काफ़ी नहीं है। हमारे पास समय नहीं है। इन्हें हिफ़ाजत से फ़ौरन कहीं रख दो।"

"हाँ! तू ठीक कह रहा है। पर मोटे तौर पर पता तो लगे कि सोना कितना है। वजन देखा जाये। तेरे गढ़ा

खोदते खोदते मैं माप ले आऊँगी।" वह अपने जेठ के घर गई और जेठानी से पूछा—"क्या अपना माप दे सकोगी। अभी लाकर देदूँगी।"

कासिम की पत्नी माप देने के लिए मान गई पर उसने यह जानने के लिए कि देवर के घर कौन-सा धान तोला जा रहा था, माप के तले में गोंद लगाकर उसे दे दी। अलीबाबा की पत्नी अपने घर गई। उसने पति के लाये हुए सोने को मापा तोला। फिर उसने पति के पास जाकर पूछा—"क्या गढ़ा खोद दिया है?

अलीबाबा ने गढ़ा खोदना खतम किया। पति-पत्नी ने मिलकर उस सोने को गढ़े में डाला। अलीबाबा की पत्नी ने जाकर वह माप जेठानी को वापिस कर दिया। उसने नहीं देखा कि उसके तले में एक मुहर चिपकी रह गई थी।

"काम खतम होते ही, तेरा माप तुझे दे दिया है।—" वह उससे कहकर अपने घर चली गई।

कासिम की पत्नी ने जब माप के अन्दर देखा तो उसे सोने की मुहर दिखाई दी। वह चकित रह गई।

"यह क्या! क्या अलीबाबा इतना धनी हो गया है कि सोने को माप में तोल रहा है! इतना धन इसके पास यकायक कैसे आगया!" उसने सोचा। वह ईर्ष्या से जल रही थी।

यह सब जब हो रहा था कासिम घर में न था। वह दुकान पर था। उसके आते ही उसकी पत्नी ने कहा—"तुम सोच रहे हो कि तुम बहुत धनी हो। तुम्हारा भाई तुम से हजार गुना अधिक धनी है।—यह जान लो। उसके पास इतनी सोने के मुहरें हैं कि वह गिनता

नहीं है मापता है। तुमने अपने को समझ क्या रखा है!"

"तुम क्या कह रही हो! मुझे समझ में नहीं आ रहा है।" कासिम ने कहा। तब उसकी पत्नी ने सारी बात बताई। माप के तले में लगी सोने की मुहर भी दिखाई। वह बहुत प्राचीन मुहर थी। किस राजा के समय की थी, यह कासिम न जान सका। पर जब से पैसेवाली विधवा से शादी की थी वह तब से अपने भाई को पराया समझने लगा था। इतने दिनों बाद अलीबाबा धन कमा पाया था। उसका खुश होना अलग, वह ईर्ष्या से जलने लगा। उस दिन रात भर उसे नींद न आई। अगले दिन उसने अलीबाबा के घर जाकर उससे कहा—"अलीबाबा, तेरा रवैय्या मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। एक तरफ़ यह दिखाते हो कि तुम गरीब हो, और दूसरी तरफ़ छुपे छुपे सोना तोलते हो। कल जब तेरी पत्नी ने हमारा माप वापिस दिया तो उसके तले में यह मुहर थी।"

यह सुनते ही अलीबाबा हैरान रह गया। वह जिस बात को किसी से न कहना चाहता था पत्नी की गलती के

कारण उसके भाई और भाभी को मालूम हो गई थी, परन्तु अलीबाबा ने न आश्चर्य दिखाया, न भय ही। उसने जो कुछ गुजरा था वह सब सुनाया। "अगर तुमने यह बात किसी से न कही, तो तुम्हें भी मैं सोने का एक हिस्सा दूँगा।" उसने भाई से कहा।

"हिस्सा तुम क्यों न देगो! पर मैं वह नहीं पूछ रहा हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि वह गुफा कहाँ है! और वहाँ तक जाने का रास्ता क्या है! जब जरूरत होगी मैं भी वहाँ से सोना ले आऊँगा।"

अलीबाबा भी क्या करता! जो कुछ भाई ने पूछा था वह सब उसने बता दिया—आखिर यह बताये बगैर भी न रह सका कि दरवाजा क्या कहने से खुलता था।

कासिम, अगले दिन सवेरे अन्धेरे में ही दस बड़े बड़े खच्चरों को लेकर, अलीबाबा के बताये हुये रास्ते पर जंगल में निकल पड़ा। अलीबाबा के चढ़े हुये पेड़, झाड़ियाँ, टीला पहिचानता हुआ, वह पत्थर के दरवाजे के पास पहुँचा। "दरवाजा खोल, तिल" उसके यह कहते ही दरवाजा खुला। कासिम के अन्दर जाते ही दरवाजा फिर बन्द हो गया।

अन्दर रखी धनराशि को देखकर कासिम चकरा गया। अलीबाबा की बातों से वह अनुमान न कर पाया था कि वहाँ इतना धन था। उसका मन धन पर ही लगा हुआ था। वह जो जो थैले ले जाना चाहता था, दरवाजे के पास ले आया। परन्तु धन एकत्रित करने में वह इतना तन्मय हो गया कि दरवाज़ा खोलने का मन्त्र भूल गया। "दरवाज़ा खोलो, तिल" के बदले, वह न जाने क्या क्या कहता

रहा। कभी, सौंफ कहता, कभी जीरा। दरवाज़ा न खुला। कासिम घबरा गया। वह झुँझलाकर वहीं रह गया।

कासिम ने सपने में भी ख्याल न किया था कि मामला इतना उलझ जायेगा। वह जान गया कि वह खतरे में फँस गया था। वह जमा किये हुए थैलों को पैर से इधर-उधर फेंकने लगा। उसे तब उस कमरे की धनराशि किंचित-मात्र भी आकर्षक न लगी।

ठीक दुपहरी में चोर वहाँ आये। जब वे दूरी पर ही थे कि उनको टीले के पास कासिम के खच्चर दिखाई दिये। उन पर उन्होंने कुछ लदा भी देखा। वे घबरा गये। उन्होंने अपने घोड़ों को और तेज़ी से दौड़ाया। वे जल्दी टीले पर पहुँच गये। उन्होंने खच्चरों को जंगल में भगा दिया। तलवारें निकालकर, मन्त्र पढ़कर, दरवाज़ा खोलकर, वे अन्दर गये।

इतने में, घोड़ों की आहट सुनकर कासिम जान गया कि चोर वापिस आ गये थे। दरवाज़ा खुलते ही उसने बाहर भागने की कोशिश की। भागते भागते उसने सरदार को एक धक्के में नीचे गिरा दिया। परन्तु और चोरों ने उसे घेर लिया और उसे मार दिया।

फिर उन्होंने अपनी गुफ़ा गौर से देखी। कासिम ने जो थैले दरवाज़े के पास रखे थे उनको ले जाकर उनकी जगह पर रख दिया। अलीबाबा द्वारा ले जाये गये सोने के बारे में भी वे जान गये।

कासिम कैसे अन्दर आया था! दरवाज़ा खोलने का मन्त्र दूसरे कैसे जान गये थे! वे अनुमान न कर सके, अगर कोई इस मन्त्र को जानता हो उसको डराने के लिये, चोरों ने कासिम के शरीर के चार टुकड़े

कर दिये। गुफा के दरवाजे के दोनों तरफ़, उन्होंने दो दो टुकड़े लगा दिये। फिर दरवाज़ा बन्द करके, घोड़ों पर सवार हो, इधर उधर डाका डालने निकल गये।

रात हो गई। कासिम घर वापिस न आया। उसको न आता देख उसकी पत्नी घबराई। अलीबाबा के घर जाकर उसने अलीबाबा से कहा—"तुम्हारे भाई, जंगल क्यों गये हैं, तुम जानते ही हो। अन्धेरा हो गया है। वे अभी तक वापिस नहीं आये हैं। जाने किस आफ़त में वे फँस गये हों। मुझे डर लग रहा है।"

"भाभी, सिर्फ़ इतनी बात पर तुम्हारे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। शहर में शोर शराबे के खतम होने से पहिले ही वह आ जायेगा।" अलीबाबा ने कहा।

कासिम का काम क्योंकि भेद भरा था, इसलिए कासिम की पत्नी को अलीबाबा की बातें ठीक ही लगीं। वह घर गई और आधी रात तक वह पति की इन्तज़ार करती रही। परन्तु उसके बाद उसके सन्देह दुगुने तिगुने हो गये। वह रो भी नहीं सकती थी। इसलिए पति के लिए

घुट घुट कर रोने लगी। देवर की बातों में दखल देने के कारण वह अपने को कोसने लगी। वह रात भर रोती रही। जब वह सवेरे अलीबाबा के घर गई तो उसकी आँखें सूजी हुई थीं। उसको देखते ही अलीबाबा जान गया कि वह उसके घर क्यों आई थी।

उसके पूछने से पहिले ही, अलीबाबा अपने तीनों गधों को लेकर जंगल चला गया। जाते समय उसने भाभी से ढाढस बाँधकर रहने को कहा। रास्ते में न उसे उसका भाई दिखाई दिया, न उसके खबर ही। और तो और उसको टीले के पास खून के दाग दिखाई दिये। अलीबाबा का माथा ठनका। जब मन्त्र पढ़कर, वह गुफा के अन्दर गया और अपने भाई के शव के टुकड़े दरवाज़े पर टंगे पाये वह काठ-का-सा हो गया।

यद्यपि उसके भाई ने उसके प्रति बड़े भाई का कर्तव्य नहीं निभाया था तो भी उसने उसके प्रति अपना कर्तव्य निभाने का निश्चय किया। उसने अपने भाई को एक गधे पर लादकर उसे लकड़ियों से ढका। फिर उसने कई सोने की थैलियाँ

मोर्गियाना नाम की गुलाम लड़की ने दरवाज़ा खोला। वह कासिम के घर में काम करनेवाली नौकरानी थी। बड़ी अक़्लमन्द और समझदार थी। वह बड़ी से बड़ी उलझनों में अक़्ल से काम लेती। उसने मोर्गियाना से कहा—"यह बड़े रहस्य की बात है। इस गधे पर तेरे मालिक का शव है। हमें, लोगों को यह विश्वास दिलाना है कि वे बीमार थे और बीमारी के कारण मर गये हैं। फिर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया करनी है। यह सब कैसे करोगी? इसकी जिम्मेवारी तुम्हारी ही है। जा। अपनी मालकिन से यह सब कह!" उसने भाई का शव उसके घर में रख दिया। मोर्गियाना को फिर बताया कि क्या क्या उसे करना होगा। वह अपना गधा लेकर अपने घर चला गया।

लेकर गधों पर लादीं। उन्हें भी लकड़ियों से ढक दिया। दरवाज़ा भी पहिले की तरह बन्द कर दिया।

अन्धेरा होने से पहिले वह जंगल से न आया। वहीं थोड़ी देर ठहर गया। अन्धेरा होते ही वह शहर में घुसा। जिन दो गधों पर वह सोना लाया था उन्हें अपने घर के पिछवाड़े में रोक दिया। पत्नी से कहा कि वह उनका भार उतार दे। तीसरे गधे को लेकर वह अपने भाई के घर गया। उसने घर का दरवाज़ा खटखटाया।

अगले दिन सवेरे मोर्गियाना एक औषधी की दुकान में गई। "मुझे थोड़ी कस्तूरी दीजिये।"

"किसके लिये?" औषधी बेचनेवाले ने पूछा—"हमारे मालिक कासिम जी की तबीयत ठीक नहीं है। वह न कुछ खा पा रहे हैं, न बोल ही पा रहे हैं।" मोर्गियाना ने कहा।

शाम को आकर उसने पूछा—"थोड़ा गरल हो तो दीजिये। यह भी असर करेगी कि नहीं, मालूम नहीं!" उसने रोनी-सी शक्ल बनाई हुई थी।

उस दिन अलीबाबा अपनी पत्नी के साथ कासिम के घर दो-तीन बार गया। उनके शक्ल पर भी शोक नज़र आता था। सब को विश्वास हो गया कि कासिम सचमुच बहुत बीमार था। शाम को जब कासिम के घर रोना-धोना शुरू हुआ तो सब जान गये कि कासिम मर गया था। मोर्गियाना ने सब से कहा कि उसका मालिक मर गया था।

अगले दिन सवेरे मोर्गियाना मुस्ताफ़ा नाम के बूढ़े मोची की दुकान पर गई। वह जानती थी कि वह अपनी दुकान सवेरे ही खोलता था। उसने बूढ़े मोची के हाथ में एक दीनार रखकर कहा—"बाबा मुस्ताफ़ा, तू अपने सीने के औजार लेकर मेरे साथ आ। पहिले ही बता देती हूँ कि जहाँ मैं तुझे ले जा रही हूँ, उसके बारे में, किसी को कुछ न मालूम हो। इसलिए आधे रास्ते में मैं तेरी आँखों पर पट्टी बाँध दूँगी।"

बूढ़े को सन्देह हुआ—"ऐसा लगता है तुम मुझसे कोई ऐसा काम करवाने जा रही हो, जो मुझे नहीं करना चाहिये।"

"तेरी कसम, बाबा, ऐसा कोई काम नहीं है। मेरे साथ आ। कुछ फिक्र न करो।" मोर्गियाना ने कहा।

मुस्ताफ़ा उसके साथ चल पड़ा। आधे रास्ते में, अपने वचन के अनुसार, मोर्गियाना ने उसके आँखों पर पट्टी बाँध दी। वह उसको अपने मालिक के घर ले गई। उसको शववाले कमरे में ले गई। तब उसकी आँखें खोलीं।"

"बाबा, यदि तुमने शव को जल्दी सी दिया तो मैं तुम्हें एक और सोने की दीनार दूँगी।" मोर्गियाना ने कहा। मुस्ताफ़ा ने जल्दी जल्दी अपना काम कर दिया। दीनार ले ली। आँखें बँधवा कर वह उसके साथ चला। जहाँ पहिले उसकी आँखें बन्द की थीं, वहाँ आकर उसने आँखें खोल दीं। वह फिर अपने घर चली गई। आने से पहिले उसने देख लिया कि बूढ़ा उसका पीछा नहीं कर रहा था। बड़ी होशियार थी वह नौकरानी।

घर आते ही मोर्गियाना ने अपने मालिक की लाश को नहलाया। अलीबाबा ने साम्राणी जलाई। उसको वह पोषाक पहिनाई, जो विधि के अनुसार पहिनानी थी। जल्दी ही मस्जिद से मुल्लाह भी आ गया। अन्त्येष्टि संस्कार करवाने के लिये भी आदमी आ गया। चार आदमी शव को उठाकर कब्रिस्तान ले गये। केवल मोर्गियाना ही, छाती पीटती, रोती रोती शव के साथ गई। कासिम की पत्नी, आस-पड़ोस की स्त्रियों के साथ, रोती घर में ही रही।

इस तरह, कासिम का डाकुओं के हाथ मारा जाना, ढक दिया गया। उसकी मृत्यु का रहस्य जाननेवाले केवल अलीबाबा, मोर्गियाना और कासिम की पत्नी मात्र थे। अन्त्येष्टि के दो-तीन दिन बाद, बोरिया, बिस्तर लेकर अलीबाबा ने अपने भाई के घर रहने का प्रबन्ध कर लिया। जो सोना-चान्दी वह चोरों की गुफ़ा से लाया था, वह भी रात में लुके छुपे, अलीबाबा नये घर ले गया।

जो दुकान पहिले कासिम चलाया करता था अब अलीबाबा का बड़ा लड़का चलाने लगा। (अभी और है।)

मित्र-संप्राप्ति

एक दिवस दृग में आँसू भर
जब आया लघुपतनक पास,
हिरण्यगर्भ ने पूछा उससे—
"कहो, आज क्यों बने उदास ?"

लघुपतनक ने कहा "बंधु, अब
यहाँ नहीं होगा निर्वाह;
जाता हूँ परदेस इसीसे
जारी है यह अश्रु-प्रवाह।

पड़ा अकाल बहुत है भारी
मचा हुआ है हाहाकार,
लोगों के घर अन्न नहीं है
खाते सब पशु-पक्षी मार।

जगह जगह पर बहेलियों ने
फैला रक्खे हैं निज जाल,
बच निकला हूँ आज एक से
किसी तरह उड़कर तत्काल।

बंधु, यहाँ अब नहीं गुजर है
जाता हूँ ऐसे ही देश,
जहाँ चैन से बिता सकूँगा
बची आयु अब जो है शेष।"

हिरण्यगर्भ ने कहा विकल हो—
"कौन देश वह ऐसा मीत,
जहाँ जा रहे अभी यहाँ से
तजकर तुम हम सबकी प्रीत !"

लघुपतनक ने कहा "यहाँ से
दूर एक जंगल है और,
जहाँ नाचते मोर सदा हैं
तरुओं में आते नित बौर।

बीच उसी जंगल के भाई,
बहुत बड़ा है पोखर एक;
जिसमें कछुआ-नाम मंथरक
रहता मित्र हमारा एक।

साथ उसीके रह लूँगा मैं
यों ही यहाँ न दूँगा जान,
मैं समर्थ यदि तो मेरे हित
सभी जगह हैं एक समान।

श्री "भारतीभक्त"

जो समर्थ हैं उन्हें बोझ क्या,
व्यवसायी को दूरी क्या ?
प्रियभाषी का कौन पराया,
खग की साध अधूरी क्या !

अपने अपने राज्यों में ही
राजाओं का होता मान,
सभी जगह हैं पूजे जाते
होते जो ज्ञानी विद्वान।

यह सब सुनकर चूहा बोला—
"मीत चलूँगा मैं भी साथ,
दुःख मुझे भी यहाँ बहुत है
चकराता रहता नित माथ।"

"क्यों, तुमको क्या दुःख यहाँ पर ?"
पूछा कौवे ने तत्काल,
उत्तर दिया तुरत चूहे ने—
"बाद कहूँगा सारा हाल।

तुम अपने ही पीठ चढ़ाकर
चलो मुझे भी ले अब शीघ्र,
यहाँ तड़पकर मर जाऊँगा
दुख है इतना उर में तीव्र !"

खुशी खुशी तब कौआ बोला—
"इससे बढ़ क्या सुन्दर बात,
सुखद तुम्हारा साथ सुलभ हो
तो सह लूँगा झंझावात !"

साथ पीठ पर ले चूहे को
तत्क्षण कौआ उड़ा अकास,
आनन-फानन में आ पहुँचे
दोनों उस पोखर के पास।

कछुआ था पोखर में बैठा
जल से गर्दन जरा निकाल,
लघुपतनक को देख तुरत ही
मिला हर्ष से हो बेहाल !

लघुपतनक ने कहा—"मंथरक,
हिरण्यगर्भ है मेरा मित्र,
दुख की कथा सुनो अब इससे
जो है शायद बड़ी विचित्र।"

चूहा बोला—"किसी नगर में
एक शिवालय था प्राचीन,

जिसमें रहता था संन्यासी
ताम्रचूड़ नामक अति दीन।

भिक्षा से मिलता था जो कुछ
उससे भर लेता था पेट,
बचे-खुचे को टाँग कहींपर
जाता था सुख से वह लेट।

एक रात मेरे कुछ साथी
आये दौड़े दौड़े पास,
कहा—"नाथ, मठ में तो अब है
संन्यासी की बजती साँस।

खूँटी पर है उसका भोजन
बने हमारा वह आहार,
मिले आपकी आज्ञा यदि तो
दें झट उसपर धावा मार।"

सुनते ही यह झट जा पहुँचा
अपने दल को ले मैं साथ,
भिक्षा का जो पात्र टँगा था
चढ़ा उसीपर सबके साथ।

यही तमाशा रहा हमारा
आ ही जाते हम हर रात,
संन्यासी का भोजन सारा
खा ही जाते हम हर रात।

परेशान हो संन्यासी तब
फटा बाँस ले आया रात,
सोते में भी उसी बाँस को
ठक-ठक करता सारी रात।

फिर तो भय से पास न जाते
सुनकर हम उसकी आवाज़,
रात-रात-भर रहे देखते
लेकिन रुकी न वह आवाज़।

इसी बीच में एक रात को
आया संन्यासी का मित्र,
वह भी था संन्यासी ही, पर
लगता था कुछ हमें विचित्र।

उसने देखा ताम्रचूड़ को
नहीं सुन रहा उसकी बात,
जिसपर गुस्से से वह बोला—
"यह क्या ठक-ठक सारी रात?"

SATYAM
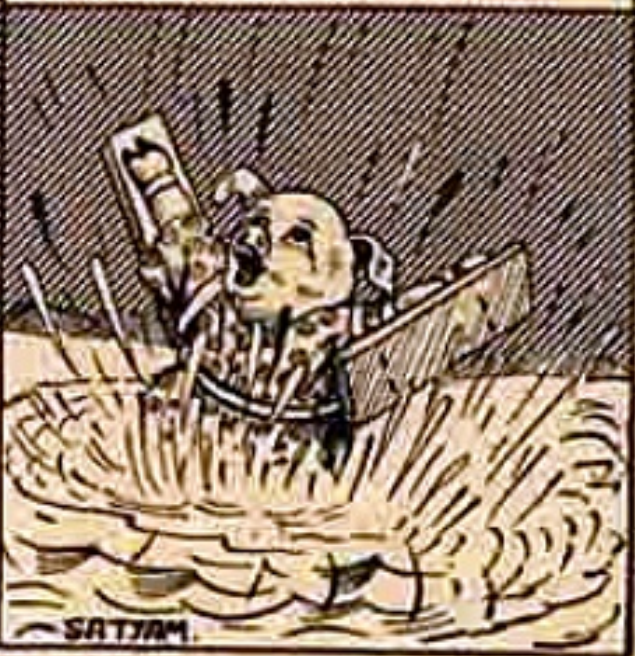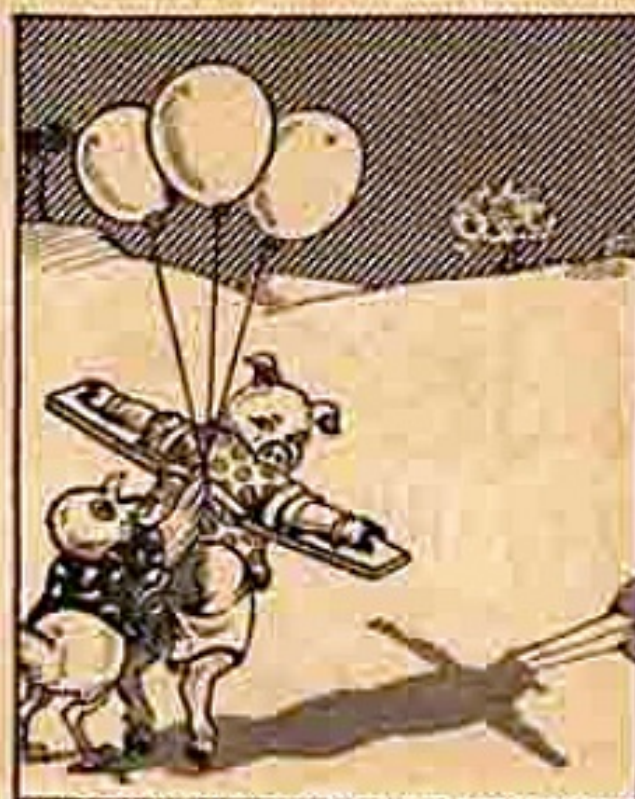
* प्राण-रक्षा *

विक्रमार्क अपनी ज़िद पर रहा। वह फिर वृक्ष के पास गया। शव को उतार कर कन्धे पर डाल कर श्मशान की ओर चल दिया। शव में स्थित बेताल ने कहा, "तू एक अपरिचित के लिये कष्ट झेल रहा है। पर तुम यह नहीं समझ पाते यह कितना खतरनाक है। जो दूर के आदमियों की सहायता करते हैं, उनकी सहायता भी कैसी आपत्तिजनक हो जाती है, यह निरूपित करने के लिए एक कहानी सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी सुनाई।

किसी दूर देश में समुद्र के किनारे झोंपड़ा डालकर एक बूढ़ा रहा करता था। समुद्र का वह किनारा पथरीला था। समुद्र में जब ज्वार आता तो पत्थरों में काई

बेताल कथाएँ

बूढ़े को यकायक गठिया हो गया। जो पचास वर्ष काई जमा करते करते जीता आया था उसकी यह हालत हो गई थी कि वह चल भी न पाता था। इसलिए उस काम पर उसकी पोती लग गई। उसका नाम था मल्ली।

मल्ली की उम्र करीब करीब सोलह वर्ष की थी। उसका सारा जीवन समुद्र के किनारे ही गुजरा था। जब दादा काई के लिए जाया करता तो वह भी साथ जाती। दादा काई बेचने जाता तो वह समुद्र के किनारे के पत्थरों के ढेर में अटकी काई खोजती।

इसी खोज के सिल सिले में एक दिन मल्ली को बहुत ही अद्भुत जगह दिखाई दी। वह एक ताल सा था। बूढ़े के घर के नीचे, थोड़ी दूर पर, समुद्र के भूमि के अन्दर कुछ दूर आने से वह ताल बना था। उसमें जगह जगह पत्थर थे। समुद्र में जब ज्वार आता तो उनमें से कई डूब डूब जाते। और जब भाटा आता तो समुद्र की काई बहुत सी वहीं रह जाती।

वह ताल बहुत खतरनाक था। परन्तु वहाँ बहुत काई थी। वहाँ जाने के लिए

अटक जाती। बूढ़ा उसको इकट्ठा कर लेता और गाँव में बेच देता, उससे आजीविका चलाता। गाँव में थोड़ी बहुत खेती होती थी। पथरीली जगह होने के कारण खेती बड़ी मुश्किल से हो पाती थी। इसलिए किसान काई खरीद लेते और उसका खाद के रूप में उपयोग करते। जो पैसा देकर काई नहीं खरीद पाते, वे स्वयं समुद्र के पास जाकर काई जमा करके ले आया करते थे। परन्तु इसी काम को रोजी बना करके, जीनेवाले सिवाय उस बूढ़े के और कोई न था।

रास्ता न था। मली ने हाथ से उठाकर, जगह जगह बड़े बड़े पत्थर डाले। और अपने घर से ताल तक एक रास्ता-सा बना लिया। यह भी जान गई कि कौन से पत्थर काई के कारण फिसलते थे और कौन से नहीं। बड़ी मेहनत के बाद, वह बहुत सी काई इकट्ठी करती और रोज गाँव जाकर बेचती।

मली बहुत ही भोली भाली कन्या थी। जितनी दिलचस्पी वह काई इकट्ठी करने में दिखाती उतनी किसी और चीज़ में नहीं दिखाती। ग्राम में उसके मित्र कोई न थे। अपनी उम्र की लड़कियों की तरह न वह अच्छे कपड़े ही पहिनना चाहती थी न जेवर जवाहरात ही। काई के बेचने के मामले में भी वह बड़ी सख्त रहती। कोई उसे धोखा देने की कोशिश करता तो वह उसे कुत्ते की तरह काटती।

वह एक दिन ताल में काई इकट्ठा कर रही थी कि एक युवक उस तरफ़ आया। उस युवक का नाम भरत था। वह गाँव के एक बड़े किसान का लड़का था।

यह जानकर कि वह काई इकट्ठा करने आया है—मली ने उसके पास जाकर गुस्से में पूछा—"तुझे यहाँ क्या काम है?"

"जो काम तुझे है, वह मुझे भी है। मैं नहीं जानता था कि यहाँ इतनी काई है।" भरत ने कहा।

"वाह, काई जरा छूकर तो देख।" मली ने डराते हुए कहा।

"क्या करोगी! क्या मुझ में तुम्हारे जितना बल नहीं है! भरत ने हँसते हुए पूछा।

"यह ताल मेरा है। यहाँ तक पहुँचने के लिए मैंने ही रास्ता बनाया है।" मली ने कहा।

"आगे तुम यह कहोगी कि यह सारा समुद्र तुम्हारा है पर यह सबका है।" भरत ने कहा।

"हवा सबकी है, इसलिए अगर तुम्हारी छत पर चढ़कर कोई हवा ले तो क्या तुम उसे वैसा करने दोगे?" मल्ली ने पूछा।

"चाहती हो तो पटवारी से शिकायत कर दो। मैं यहाँ से काई लेकर ही रहूँगा।" भरत ने कहा।

मल्ली ने पटवारी से जाकर शिकायत की।

"भरत की बात झूटी न थी। अगर तू कहे कि उस ताल की सारी काई तेरी है तो कोई फायदा नहीं। उस काई को लेने का सबको अधिकार है।" पटवारी ने उसको समझाकर बताया।

"उस ताल के लिए कोई रास्ता न था। हमारे घर के सामने जो रास्ता है, वही उसका रास्ता है। क्या सबको हमारी जमीन में से जाने का भी हक है?" मल्ली ने पूछा। उसने यह भी कहा कि भरत के पिता ने मुझ से सस्ते में काई खरीदनी चाही, जब मैंने न दी तो उसने काई जमा करने के लिए अपना लड़का भेज दिया।

सब सुनकर पटवारी ने कहा—"मली, इस छोटी सी बात पर क्यों बड़ों का वैर मोल लेती हो! उस ताल में, सुना है, बहुत काई है। जितना तू चाहती है उतना लेले, जितना वह चाहेगा वह ले लेगा।"

मली को यह फैसला सुनकर बड़ा गुस्सा आया।

"जो कोई उस ताल में पैर रखेगा, उसके पैर टूट जायेंगे, तब जाकर लोगों को अक्ल आयेगी।" जो कोई गाँव में दीखा उसको मली ने यह कहा। कहकर वह घर चली गई।

भरत ने, बाद में, मली से सुलह करनी चाही।

"हम फालतू क्यों लड़ें झगड़ें! तुम लड़की हो, मैं लड़का हूँ। जो काई तेरी पहुँच में होगी मैं उसे न लूँगा। दूर दूर के पत्थरों पर अटकी काई को मैं इकट्ठा कर लूँगा। इस तरह हम दोनों का काम बन जायेगा। और हम चैन से रह सकेंगे।" भरत ने कहा।

"ये बातें न बनाओ! तेरी और मेरी दोस्ती का क्या मतलब! तू तो ताल के बारे में कुछ जानता-भालता नहीं। उसमें

तू जितनी दूर जा सकता है, मैं उससे दूर जा सकती हूँ।" मल्ली ने कहा।

"अच्छा, तो देखें!" भरत ने कहा।

"अगर तू बेवकूफ़ी करके अन्दर गया और किसी भँवर में फँस गया, और हाय हाय करने लगा तो मैं तुझे निकालने नहीं आऊँगी।" मल्ली ने उसे डराया।

भरत ठहका कर हँसा। काफ़ी समय बीत गया। एक दिन खूब बदली छाई। हवा चलने लगी। तूफ़ान की आशंका बढ़ गई। इसलिए वह अपनी लकड़ी लेकर बड़े तड़के ही ताल पर चली गई। जब वह वहाँ पहुँची तो भरत वहाँ पहिले से ही मौजूद था।

समुद्र में बड़ी बड़ी लहरें उठ रही थीं। रिमझिम रिमझिम भी शुरू हो गई थी। भरत एक पत्थर पर खड़ा होकर देखने लगा कि काई के लिए वह कितनी दूर जा सकता है। वह जितनी भी दूर जाये, मल्ली ने उससे आगे जाने का निश्चय किया। भरत एक पत्थर से, दूसरे पत्थर पर उत्तर की ओर इस तरह जा रहा था, जैसे कुछ निश्चय कर लिया हो। मल्ली का मन सन्तुष्ट हुआ क्यों कि उस तरफ़ वह भँवर भी थी, जिसके बारे में उसने कहा था। मल्ली आस पास की काई लकड़ी से इकट्ठा करने लगी। भरत भी दूरी पर काई जमा करने लगा। मल्ली ने देखा कि उसके ढेर से, उसका ढेर बहुत छोटा था। जब उसकी लकड़ी में काई फँसती तो मल्ली ज़ोर से हँसती। भरत भी चिढ़ने लगा। उसने मल्ली से अधिक काई इकट्ठी करने की सोची।

इतने में उसकी नजर भँवर पर पड़ी। उसमें काई लगातार चक्कर लगा रही थी। वहाँ काई इतनी मोटी थी कि आदमी मानो

उस पर तैर सकता था। मल्ली जानती थी कि उस भँवर में से काई निकालना कितना मुश्किल था। वह कभी उसके पास भी न गई थी। उसके चारों ओर जो पत्थर थे, वे बहुत फिसलनदार थे। भाटे में भी वहाँ से पानी पूरी तरह न हटता था।

भरत मुश्किल से उन पत्थरों पर गया। बैठते उठते उसने कठिनाई से लकड़ी से थोड़ी काई जमा की। पर उसने लकड़ी उठाई ही थी कि उसका पैर फिसल गया, परन्तु जैसे तैसे भरत भँवर में गिरने से बच गया।

"क्या तेरी अक्ल मारी गई है! अगर तू उसमें गिरा तो मर मरा जायेगा।" मल्ली चिल्लाई।

"तुम अपना काम देखो, तुम्हें मुझ से क्या वास्ता!" भरत ने कहा।

"हाँ! मुझे तुम से क्या वास्ता!" कहती वह अपनी लकड़ी लेकर—काई इकट्ठा करने लगी। इतने में उसे ऐसा शब्द सुनाई दिया मानों कोई भँवर में गिर पड़ा हो। जब उसने सिर उठाकर देखा तो भरत न था। उसका शरीर भँवर में चक्कर काट रहा था।

वह रेंगती रेंगती भँवर के पास गई। भरत एक बार तैरता दिखाई दिया। उसके माथे पर चोट लगी हुयी थी, और खून बह रहा था। जब वह पास आया तो उसने उसका कुड़ता पकड़ लिया। और उसे लकड़ी देते हुये उसने कहा— "इस लकड़ी को जोर से पकड़ लो।" उसमें अभी होश थी। उसने लकड़ी पकड़ ली। फिर मल्ली ने उसको पत्थरों पर खींच दिया।

मल्ली को न सूझा कि वह क्या करे। समुद्र में ज्वार आ रहा था। अगर उसको

वहाँ से न हटाया गया तो जल्दी ही आस पास के इलाके में पानी पूरी तरह भर जायेगा। न जाने उसमें कहाँ से उतनी शक्ति आ गई। वह उसको उठाकर, हाँफती हाँफती अपने झोंपडे में पहुँची। भरत में तब होश न थी। उसका मुँह बिल्कुल निष्प्राण-सा हो गया था। उसको देखकर बूढ़े ने कहा—"मल्ली, लगता है, यह मर गया है।

"नहीं, दादा! मैं गाँव जाकर उसके आदमियों को बुलाकर लाती हूँ। शायद वे इसे जिलालें।" मल्ली ने कहा।

"वाह, ऐसी मूर्खता का काम न कर। वे कहेंगे, हमने ही इसे बदला लेने के लिए मारा है।" बूढ़े ने कहा।

मल्ली यकायक घबरा गई। परन्तु फिर उसने कहा—"कहते हैं तो कहें।" कहती वह गाँव की ओर भागी।

जल्दी ही, भरत के माँ बाप और नौकर भागे भागे आये। माँ भरत पर गिरकर चिल्लाने लगी—"अरे! इन लोगों ने तुझे अपने पेट में रख लिया है।" भरत के पिता ने उसको रोकते हुये कहा—"जिसने मेरे लड़के की यह हालत

की है, क्या उनका खून लिये बगैर मैं रहूँगा!"

मल्ली का मानों कलेजा थम गया। जो दादा ने कहा था, वही हो रहा था! भरत शायद न जिये। क्या हत्या का अपराध उस पर थोपा जायेगा! इसकी क्या गवाही है कि उसके प्राण बचाने के लिए उसने अपने प्राणों की भी परवाह न की थी।

अपने बेहोश लड़के और मल्ली को लेकर भरत के माता पिता गाँव गये। वहाँ उन्होंने मल्ली को पटवारी के हवाले कर दिया। उसने रात भर उसको जेल में रखा।

रात में भरत ने कराहते कराहते आँखें खोलीं। "क्या बेटा!" उसकी माँ ने पास आकर पूछा। उसने इसतरह चारों ओर देखा जैसे वह किसी को खोज रहा हो। उसे होश में आया देख माँ बाप बड़े खुश हुये। वैद्य ने बताया कि वह जीवित हो सकेगा।

अगले दिन भरत का पिता मल्ली को देखने जेल में गया। मल्ली उसे देखकर चकित हुयी। "बेटी, भरत तेरे सपने ले

रहा है। बिना तुझे देखे, वह, नहीं सोयेगा। एक बार हमारे घर आ।" मल्ली गई। उसको देखकर भरत बड़ा प्रसन्न हुआ। धीमे धीमे भरत ठीक हो गया। उसकी, मल्ली के साथ शादी हो गई। मल्ली ने अपना झोंपड़ा छोड़ दिया। उसने अपने ससुर के बड़े घर में पैर रखा।

बेताल ने कथा सुनाकर कहा—"राजा मुझे एक ही सन्देह है। दादा के यह कहने पर भी कि तुम पर हत्या का अपराध थोपा जायेगा, मल्ली बिना झिझके भरत के माँ-बाप के पास क्यों गई! क्या उसे भरत पर प्रेम था! उसी की वजह से वह इतनी दूर हो गया था, क्या इसके पश्चाताप के कारण! इनका उत्तर तुमने जानबूझकर न दिया तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।"

"मल्ली का, भरत से उस थोड़े समय में प्रेम हो जाने का कोई कारण नहीं है। ठीक समय पर उसमें उसके प्राण बचाने का उत्तम विचार उठा। और जो पुण्य कार्य करने निकलते हैं, वे किसी विघ्न की परवाह नहीं करते। बड़े से बड़ा त्याग करते हैं। इसलिये मल्ली भँवर के पास गई। उसने उसे भँवर में से तो बचा लिया, पर वह उसको खतरे से न बचा सकी। वह काम भरत के माँ-बाप ही कर सकते थे। इसलिये वह उन्हें बुलाने गई। अपनी प्राणों की परवाह किये बिना भरत को भँवर से निकालने वाली मल्ली को हत्यारा कहे जाने का यदि भय रहा हो, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।" विक्रमार्क ने कहा।

इसप्रकार राजा का मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जाकर बैठ गया। (कल्पित)

सुगुण और दुर्गुण

विष्णु के आदेश के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया। सृष्टि के पूर्ण होने के बाद उसने कई गुणों को बनाकर कहा—"तुम मानवों के साथ रहकर उनकी सहायता करो।" उनको उसने भूमि पर भेज दिया।

जब वे पहिले पहल पृथ्वी पर आये तो देखने में वे सब गुण एक जैसे ही लगते थे यद्यपि उनकी प्रकृति भिन्न भिन्न थी पर सबकी आपस में मैत्री थी। वे साथ रहते, साथ घूमते-फिरते, साथ खाते-पीते।

परन्तु कुछ दिनों बाद उनकी मैत्री में दरारें पड़ने लगीं। कई गुणों का प्रभाव कम होने लगा। उनका जीवन दुःखमय होने लगा। उनकी पूछताछ भी कम होती। कहीं कहीं तो लोग उनको बुरा भला भी कहने लगे थे। वे सद्गुण थे।

उसी समय दुर्गुणों का प्रभाव बढ़ता गया। उनका जीवन फलने-फूलने लगा। जहाँ देखो उन्हीं का आदर सम्मान होता। उन्हीं की पूछ होती।

ज्यों ज्यों यह परिवर्तन बढ़ता गया, त्यों त्यों सद्गुणों ने दुर्गुणों के साथ रहना-सहना बन्द कर दिया। उन्होंने अपने लिए अलग जगह ढूँढ ली। परन्तु वह सुन्दर जगह न थी, न समृद्ध ही। दुर्गुण अच्छे अच्छे कपड़े पहिनते, बड़े बड़े मकानों में रहते, खूब खाते-पीते, जहाँ जी चाहता वहाँ घूमते-फिरते। जो चाहते वह करते।

एक दिन सद्गुणों की एक सभा हुई। उसमें वे अपनी बुरी हालत पर चर्चा करने लगे।

"हम सद्गुण हैं न! हमारी दुःस्थिति का क्या कारण है! न रहने के लिए अच्छे घर हैं, न खाने के लिए उत्तम भोजन ही। हम जहाँ कहीं भी जाते हैं, तो सब कोई हम पर नाक भौं चढ़ाता है। उन दुर्गुणों को देखिए। उनके वैभव के बारे में कहा नहीं जा सकता। वे दुनियाँ भर में घूमते हैं और सब जगह उनका स्वागत-सत्कार होता है।" धर्म ने ऊँची आवाज़ में कहा।
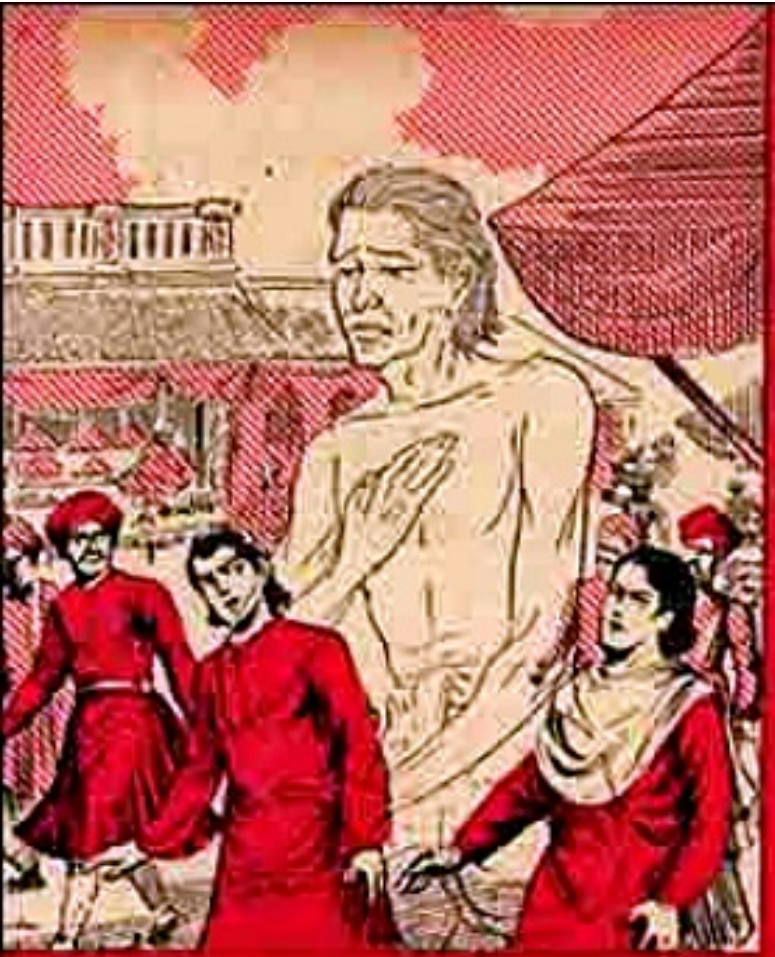
"वे रेशमी कपड़े पहिनते हैं। पापी उनकी आवभगत करते हैं, यह सोचकर दुखी होना ठीक नहीं है। पुण्यात्मा सब हमारी ही गुण प्रशंसा कर रहे हैं। ये भी जो पुण्यात्मा नहीं हैं, ग्रन्थों में यह ही लिख रहे हैं कि हम अच्छे हैं। संसार का बड़े से बड़ा ग्रन्थ उठाकर देखिए, उसमें हमारी ही प्रशंसा की गई है। क्या हमारे लिए यह काफ़ी नहीं है!" सन्तोष ने प्रत्युत्तर देते हुए कहा।

"इन ग्रन्थों को कोई नहीं पढ़ता पढ़ाता। उनमें दीमक लग रही है। जितना संसार में हमारा आदर होता है, उतना ही हमारी प्रशंसा करनेवाली पुस्तकों का होता है!"

"इसलिए हमें यह करना होगा कि हम लोगों के पास जायें, उनका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करें और दुर्गुणों का प्रभाव संसार से हटायें। इसी काम के लिए ब्रह्मा ने हमें यहाँ भेजा है। हमारी कोई पूछ नहीं कर रहा है, इसलिए संसार से हमारा दूर जाना भारी गलती है!" दीक्षा ने सलाह दी।

इसका सब सद्गुणों ने आमोदन किया। उसकी सलाह पर वे एक जन संकुल नगर में गये। और आते जातों से कहने

लगे—"हम सद्गुण हैं! आपके हमें न अपनाने के कारण हमारी यह बुरी हालत हुई है। कम से कम अब आप दुर्गुणों को छोड़कर हमें अपनाइये और अपने जीवन को सार्थक बनाइये।"

"अरे तुम कहाँ से आ मरे! दो तीन सद्गुणों से ही यहाँ आफ़त आई हुई है, और तुम सब क्यों आगये! जाओ, जाओ, कहीं और जगह देखो।" कहकर लोगों ने सद्गुणों को दुत्कारा।

बाकी सद्गुणों ने न्याय की ओर मुड़कर कहा—"यह क्या अन्याय है—तेरे नाम पर यहाँ कितने ही कर्मचारी, सिपाही, काम कर रहे हैं। क्या तुम यह नहीं कर सकते कि लोग हमें दुत्कारें, फटकारें न!"

न्याय ने लज्जावश सिर झुका कर कहा—"भाइयों और बहिनो, न्यायाधिकारी और सैनिक मेरे हाथ में होते तो मैं आपके साथ इसतरह क्यों दर दर भटकता! क्या मैं आपको भी बड़ी बड़ी जगह पर न नियुक्त करता!"

"अब हमें क्या करना चाहिये!" यह विकट समस्या—सद्गुणों के सामने थी। वे सोच में थे।

"मैं बताता हूँ। सुनिये इस संसार में दुर्गुण रहेंगे नहीं तो हम।—इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। वे खा पीकर मुटिया गये हैं तो क्या हुआ? भले ही हम दुबले पतले हों, हम में आत्मबल है। यदि हमने उन दुर्गुणों से युद्ध किया तो जरूर हमारी विजय होगी। इस संसार में, दुर्गुणों का नामों निशान मिटाकर, आओ, हम स्वर्ग की स्थापना करें। तभी, हम सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के प्रति अपना कर्तव्य निभा सकेंगे।" आदर्श ने जोश के साथ कहा।

सद्‌गुणों ने यह सुन करतल ध्वनि की। आदर्श को अपना नेता चुनकर उन्होंने दुर्गुणों पर धावा बोल दिया। दुर्गुण युद्ध की घोषणा सुनकर, सद्‌गुणों से कलई मिलाने निकले। एक वन में, दोनों में घमासान युद्ध हुआ। यह युद्ध बहुत देर तक चलता रहा पर किसी पक्ष की विजय न हुयी। और युद्ध खतम होता भी नजर न आता था।

उसी वन में एक तत्वज्ञानी रहा करते थे। युद्ध का कोलाहल सुनकर, वे अपना चिन्तन छोड़कर, उस स्थल पर गये जहाँ सुगुणों और दुर्गुणों का भयंकर युद्ध हो रहा था।

"क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है? क्यों यों युद्ध कर रहे हो!" तत्वज्ञानी ने दोनों पक्षवालों से पूछा।

"संसार में दुर्गुणों को निर्मूल करना हमारा कर्तव्य है। ये मनुष्यों को अपनी ओर आकृष्ट करके पापों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इनको परास्त कर हम संसार में पुण्य का प्रतिष्ठापन करना चाहते हैं।" सद्‌गुणों ने कहा।

"इनकी किसी ने देख भाल नहीं की, दर दर भटकते रहे, अब चिढ़कर, हम पर

तलवार उठाकर आये हैं। वस्तुतः हम ही संसार के शासक हैं, यह दिखाने के लिए हम युद्ध कर रहे हैं।" दुर्गुणों ने बढ़कर कहा।

"आप सब मूर्ख हैं। आप में न एक बड़ा है न एक कम। जब ब्रह्माने आपका निर्माण किया था, तब आप दोनों समान थे। यह भेद-भाव आपका ही बनाया हुआ है। सद्गुणों ने सोचा कि वे बड़े हैं। दुर्गुणों ने सोचा कि वे अधिक शक्तिशाली हैं। वास्तविक तत्वज्ञानी के लिए पुण्य-पाप दोनों ही एक हैं। वह सद्गुण व दुर्गुण दोनों से परे हैं। इसलिए आप यह व्यर्थ का कलह छोड़िये और मैत्री पूर्वक रहिये।" तत्वज्ञानी ने कहा।

तुरत दोनों पक्षों ने युद्ध छोड़ दिया। पर सन्धि कैसे की जाय? किसको दूत बनाकर भेजा जाय? क्या दुर्गुण सन्धि के लिए मानेंगे? ये समस्यायें उनके सामने उपस्थित हुईं!

"दुर्गुण उतने ठाट-बाट से नहीं जी रहे हैं, जितना कि हम सोच रहे हैं। लोग उनको सावधानी से देख रहे हैं। कितनी ही बार उन्होंने रिश्वते दीं। कितनी ही बार वे अपमानित हुये। अनीति को कई बार जेल में रखा गया। काम को कई बार जूतियाँ खानी पड़ीं। इसलिये वे हमसे सन्धि किये बगैर न रहेंगे।" विवेक ने कहा।

सब दृष्टियों से सदाचार को दूत होने के लिए उपयुक्त समझा गया। वह बूढ़ा था। सब उसका आदर करते। वह भी और सद्गुणों की तरह था, वह भी प्रायः झोपड़ियों में रहा करता था। रईस यद्यपि उसको अपने मकानों में न रखते थे। तो भी जब वह आता था, तो उसका

सम्मान करते थे। इसलिए सद्गुणों ने सदाचार को भेजने का निश्चय किया। परन्तु दुर्गुणों को सदाचार की बिल्कुल परवाह न थी। उसकी आड़ में वे जो कुछ चाहते, करते। उसे देखते ही वे कहते—"छी छी, अपना मुँह न दिखा! तू शुरू से ही हमारा किसी न किसी बहाने उपयोग करता ही आया है। तू हमसे क्या संधि-सुल्ह करेगा!" उसे उन्होंने भगा दिया।

सद्गुण न सोच पाये कि क्या किया जाय। वे जब इस हालत में थे, तो उनके बीच एक विचित्र प्राणी आया, वह प्राणी नर था या मादा वे न जान सके। वह सद्गुणों के साथ रहता, पर उनके सुख-दुख में हिस्सा न लेता। वह देखने में बहुत गम्भीर, सभ्य मालूम होता था।

"तुम दोनों में मैं सुल्ह करवा दूँगा। उसके बाद तुम में किसी प्रकार के झगड़े फसाद न होंगे। तुम दोनों में आदर व्यवहार बढ़ेगा।" नये गुण ने कहा। इस गुण का नाम कपट था।

सद्गुण यह मान गये। कपट को देखते ही दुर्गुणों को भी अचरज हुआ। क्योंकि कपट के चाल ढाल कुछ ऐसे थे जो किसी और में न थे। सच कहा जाय तो दुर्गुण, सब भद्दे से थे। कपट बड़ा नाजुक, सभ्य था।

कपट ने आसानी से दुर्गुण और सुगुणों में सुल्ह कर दी। उस दिन से नई सभ्यता प्रारम्भ हुयी। अब भी जब कभी कोई दुर्गुण, या सुगुण किसी से मैत्री करना चाहते हैं तो साथ कपट ले जाते हैं। इस तरह न सद्गुणों की ख्याति कम होती है, न दुर्गुणों का प्रभाव ही कम। इसलिए अन्तिम विजय कपट की हुयी।

[६]

[रूपधर एक वर्ष तक सुकेशिनी का अतिथि बनकर रहा। अपने अनुयायियों के दबाव पर फिर उसने घर वापिस जाने का निश्चय किया। सुकेशिनी की सलाह पर वह यमलोक गया। वहाँ उसको अपनी माँ का प्रेत दिखाई दिया। उसने उससे अपने घर के हाल-चाल जाने।]

रूपधर जब अपनी माँ से बातें कर रहा था तब और कई प्रेत आकर बलि खाने लगे। रूपधर ने सबसे परिचय किया। उनमें नवद्योत की माँ और भुवन सुन्दरी की माँ भी थी।

बलि खाकर बहुत-से प्रेत चले गये। इतने में वहाँ राजा का प्रेत आया। बलि खाने के बाद, राजा, रूपधर को पहिचान कर खूब रोया। उसने प्रेम से रूपधर की ओर हाथ बढ़ाये। परन्तु प्रेत के लिए जीवित व्यक्ति का आलिंगन करना सम्भव न था।

रूपधर ने आश्चर्य से पूछा—"प्रभु, आप यहाँ कब आये! कैसे आये!"

"दुष्ट अध्वल और मेरी पत्नी ने मुझे मारने की साजिश की। मुझे दावत के लिए बुलाया और भोजन के समय मेरी हत्या कर दी। मेरे साथ मेरे नौकर चाकरों
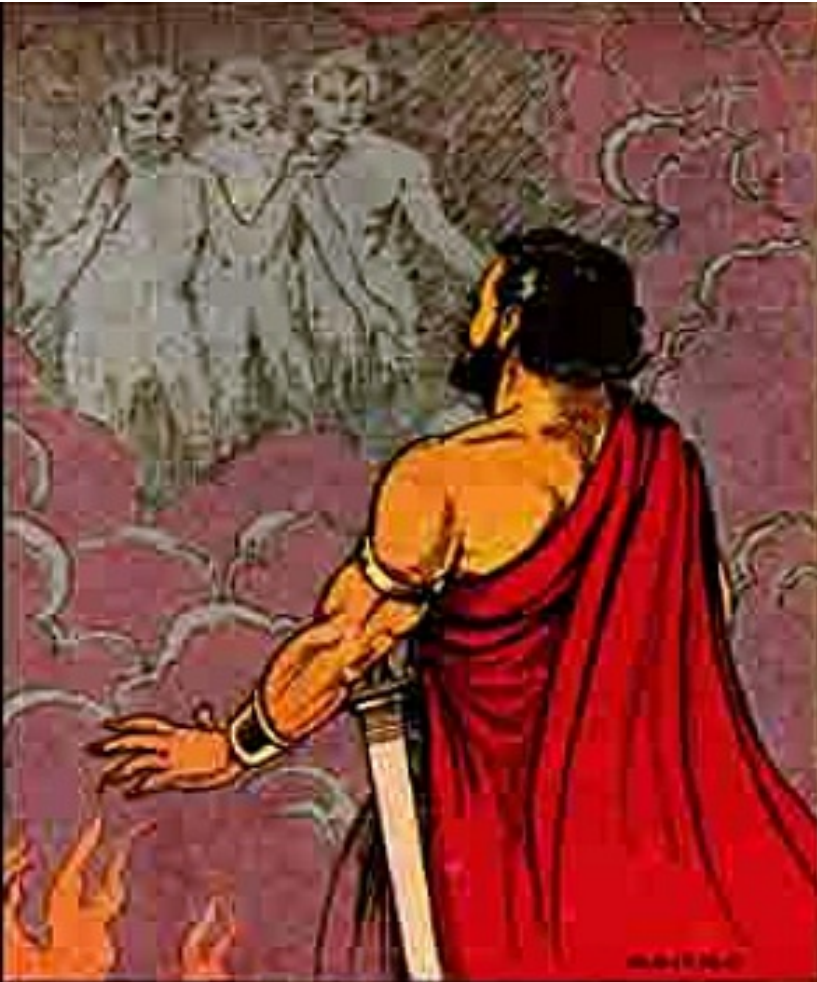
को भी मार दिया। तुमने युद्धों में बहुतों को मरता देखा होगा, पर भोजन के समय इतने लोगों की हत्या के भयंकर दृश्य का तुम अनुमान भी न कर सकोगे।" राजा ने कहा।

"हाँ, राजा, स्त्री की बुद्धि विनाशकारी है। आपके युद्ध से लौटने के पहिले ही, आपकी पत्नी ने आपको मरवाने की साजिश की होगी। स्त्री का विश्वास नहीं करना चाहिये। भुवन सुन्दरी ही देखिये। उसके लिए कितने आदमियों को मरना पड़ा!" रूपधर ने कहा।

"परन्तु तेरी स्त्री बहुत पतिव्रता है। जब तू युद्ध के लिए निकला था, वह नई दुल्हिन-सी थी। तभी लड़का पैदा हुआ था। अब तो वह काफ़ी बड़ा हो गया होगा।" राजा ने कहा।

वे इस प्रकार बातें कर रहे थे कि वहाँ वज्रकाय और पितृकीर्ति प्रेत के रूप में आये। ट्रॉय युद्ध में मृत और भी योद्धा आये।

वज्रकाय ने रूपधर को ज्यों ही पहिचाना त्यों ही वह बहुत सारी बातें पूछने लगा। "क्या मेरा लड़का अच्छा है! वह कैसा योद्धा है!"

"तेरा लड़का नवपोत बहुत पराक्रमी है। मुझे छोड़कर, नवपोत के समान व्यूह रचने वाला कोई नहीं है। उसने कितने ही पराक्रमियों को परास्त किया। जो काठ के घोड़े में गये थे, उनमें वह ही एक था जो भय से काँपा न था। वही एक ऐसा था जो तलवार लेकर तैयार बैठा था और ट्रॉय नगर पर हमला करने का हुक्म पाने के लिए उतावला हो रहा था। युद्ध में कितने मारे गये, कितने घायल हुये, यह तो मैं नहीं बता सकता हूँ।

नवचोत को एक छोटा-सा घाव भी न लगा।" रूपधर ने बताया।

यह सुन वज्रकाय का प्रेत बड़ा प्रसन्न हुआ। वह चलागया। जिन सब को देखना था, उन सब को रूपधर ने देखा। अपनी नौका में आकर उसने वापिसी यात्रा शुरू कर दी। जल्दी ही नौका सुकेशिनी के द्वीप में पहुँची।

सुकेशिनी ने रूपधर और उसके साथियों को निमन्त्रित करते हुए कहा—"तुम भी खूब हो। सब तो एक ही बार यम लोक जाते हैं पर तुम्हें दूसरी बार भी जाना होगा। आज आप सब हमारे यहाँ रहिये। खूब खाइये, पीजिये। कल सवेरे उठकर चले जाना।"

ग्रीकों ने सारा दिन खाने पीने में खर्च किया। अन्धेरा होते ही सिवाय रूपधर के सब नौका के पास गये और उसके पास की रेत पर सो गये। रूपधर सुकेशिनी के घर ही रहा। उसने यमलोक में जो कुछ देखा था उसको सुनाया।

सब सुनकर सुकेशिनी ने यों कहा—"वह सब तो गुजरी हुई बात है। अब जो करना है वह बताती हूँ। ध्यान से सुनो।

तुझे पहिले पहल नागकन्यायें दिखाई देंगी। उनके गले में सम्मोहन शक्ति है। जो उनकी आवाज सुनते हैं, बस, उनकी आयु खतम ही समझो। इसलिए उनके द्वीप में जाने से पहिले ही तुम अपने अनुयायियों के कान अच्छी तरह बन्द कर दो, ताकि वे नागकन्याओं का संगीत न सुनें। अगर तू उनका संगीत सुनना चाहता है तो तेरे अनुयायियों को तुझे मस्तूल से बाँध देना चाहिये। चाहे तू कितना ही चिल्लाये, उनसे कह देना कि वे तुझे न छोड़े। तब तू उनका संगीत सुन सकता

है। इससे तुम पर कोई आपत्ति न आयेगी। नागकन्याओं के द्वीप के बाद जब तुझे उनकी आवाज न सुनाई देगी, तब तुझे समुद्र में दो रास्ते दिखाई देंगे। इन में से तू कौन-सा रास्ता लेगा, मैं नहीं कह सकती। एक रास्ता दो पहाड़ों के बीच में से होगा। उन पहाड़ों के बीच, अगर कोई पक्षी भी गुजरे तो वे दोनों आपस में टकराते हैं और उसको मार देते हैं। वे हिलते-डुलते पहाड़ हैं। उनके बीच में कोई नौका गई हो और वह नष्ट न हुयी हो, यह कभी न सुना गया। तेरा दूसरा रास्ता विध्वसनी पर्वत की बगल में से होगा। यह पर्वत बहुत ऊँचा है। उसकी चोटी हमेशा बादलों से ढकी रहती है। उस पहाड़ की चोटी पर अभी तक कोई नहीं चढ़ सका है क्यों कि वह पर्वत बहुत फिसलनदार है। जो कोई उस पर पैर रखता है, वह फिसल जाता है। उस पर्वत में एक गुफ़ा है। उसका मुख पश्चिम की ओर है। उस गुफ़ा में विध्वसनी नाम की एक राक्षसी रहती है। वह कुत्ते के बच्चे की तरह कुन कुनायेगी पर उस आवाज से डर लगता है। उस राक्षसी

के बारह पैर, और छः सिर हैं। उसके छहों गले बहुत लम्बे हैं। उसकी गुफा समुद्र के किनारे से काफ़ी ऊँची है। अच्छे से अच्छा तीरन्दाज वहाँ तक बाण नहीं मार सकता। फिर भी विध्वंसिनी अपनी कमर बाहर निकालकर समुद्र में से मछली अपने मुख में पकड़ सकती है। उसकी पहुँच में जाकर कोई नाविक जीवित बचा हो, यह कभी न सुना गया। इस पर्वत के पास एक बड़ी भँवर है। इस भँवर में फँसी नौका को नष्ट होने से बचाने की शक्ति भगवान में भी नहीं है। अपनी नौका को इस भँवर में ले जाने की अपेक्षा विध्वंसनी पहाड़ के किनारे किनारे ले जाना ही बेहतर है। अगर नौका तेजी से गई तो विध्वंसिनी, अपने छः मुखों से छः को ही पकड़ सकती है बाकी तो बचकर निकल सकेंगे। भँवर में यदि नौका फँस गई तो उसका नामो निशाँ भी न रहेगा। सब खतम हो जायेंगे।

"फिर तुम त्रिनाक्षिया द्वीप में पहुँचोगे। वहाँ सूर्य भगवान, गौ, भेड़ों के झुण्ड के झुण्ड होंगे। पचास पचास गौवों के, सात झुण्ड होंगे। सात ही भेड़ों के झुण्ड होंगे। उनको सूर्य की दो लड़कियाँ चरा

रही होंगी। वे झुण्ड, मृत्यु और जन्म से परे हैं। न तुम न तुम्हारे सैनिक ही उनके पास जायें। अगर वे गये तो नौका और तुम्हारे अनुयायी सब नष्ट हो जायेंगे। कष्ट तो तुम्हें झेलने ही होंगे। पर तुम उनको व्यर्थ बढ़ाओ न।"

सुकेशिनी के यह कहते कहते पूर्व में सूर्य निकलने लगा। रूपधर ने नौका के पास जाकर अपने अनुयायियों को उठाया। जल्दी ही नाविकों ने लँगर उठाकर नौका चलाई। सुकेशिनी के कृपा के कारण, अनुकूल हवा बहने लगी।

पहिला पहल खतरा नागकन्याओं का था। इसलिये रूपधर ने अपने सैनिकों को उनके बारे में बताया, जो सुकेशिनी ने बताया था। उसने उनके कान बन्द कर दिये। बहरा-सा बना दिया। फिर उन्होंने रूपधर को मस्तूल से बाँध दिया। "अगर मैं मस्तूल से छूटना चाहूँ, तो मुझे और जोर से बाँध देना।" उसने अपने सैनिकों से पहिले ही अच्छी तरह आगाह कर दिया।

रूपधर की नौका को देखते ही, नागकन्यायें अपने द्वीप से गाने लगीं। वे रूपधर को सम्बोधित करके, मीठे मीठे गाने उसको सुनाने लगीं। ज्यों ज्यों, उनका संगीत रूपधर ने सुनना चाहा उसकी सुनने की इच्छा और बढ़ती जाती थी। उसने अपने अनुयायियों से कहा कि वे उसे छोड़ दें। उसको, उन्होंने और जोर से बाँध दिया। उन्होंने उसकी एक न सुनी।

थोड़ी देर में नौका दूर चली गई। नागकन्याओं का संगीत सुनाई देना बन्द हो गया। तब रूपधर के सैनिकों ने अपने कान खोल लिये। रूपधर को भी खोल

दिया। इतने में, रूपधर को कुछ दूरी पर एक बड़ी तेज़ी से घूमती भँवर दिखाई दी। उसे देखकर रूपधर के सैनिक डर गये।

"तुम डरो मत! यह भाल लोचन की आपत्ति से कोई बड़ी आपत्ति नहीं है। नौका को, जो वह पहाड़ दिखाई दे रहा है, उसके पास से ले जाओ।" रूपधर ने कहा।

उसने, अपने सैनिकों को पहाड़ की गुफा में रहनेवाली विध्वंसिनी राक्षसी के बारे में न बताया। अगर बताता तो वे भय से चप्पू दूर फेंक देते। रूपधर ने गौर से पहाड़ की ओर देखा। क्यों कि पहाड़ पर बादल थे, इसलिये वह न राक्षसी को देख सका न उसकी गुफा को ही। औरों की नजरें भँवर पर ही गड़ी थीं। सब भयभीत थे।

इतने में, राक्षसी अपने छहों सिर बाहर करके रूपधर के छः सैनिकों को उठाकर ले गई। थोड़ी देर बाद, नौका पहाड़ से आगे निकल गई।

रूपधर ने पास में एक सुन्दर द्वीप देखा। उस द्वीप से गौवों का चिल्लाना, और भेड़ों का मिमियाना सुनाई पड़ रहा था। वह ही सूर्य भगवान का द्वीप था।

यह देखते ही, रूपधर को सांकेतिक और सुकेशिनी की बातें सहसा स्मरण हो आईं। उसने भयभीत हो अपने अनुचरों से इसप्रकार कहा।

"मित्रो, इस सुन्दर द्वीप में, पैर रखना हमारे भाग्य में नहीं लिखा है। मैं जानता हूँ कि आप सब थक गये हैं और सुस्ताने की सोच रहे हैं। पर मुझे सांकेतिक और सुकेशिनी ने बताया है कि यदि हमने इस

द्वीप पर पैर रखा तो हम पर बड़ी आपत्ति आयेगी। इसलिये नौका को इस द्वीप से दूर ही दूर ले जाओ।"

रूपधर की यह बात सुन उसके सैनिक पसीने पसीने हो गये। मायावी को गुस्सा आगया। उसने कहा—"रूपधर तू मनुष्य नहीं, पत्थर है। तुम्हें न आराम की जरूरत है न चैन की। तुम्हारे आदमी, खाये, पिये, सोये बगैर मरने को तैयार हैं और तुम कहते हो कि किनारे पर नहीं जाना चाहिये। खाना पकाकर पेट भर खाने नहीं दे रहे हो। अब रात भी आ रही है। हो सकता है कि रात में तूफ़ान आये। अगर तूफ़ान आया तो हमारी समुद्रमें क्या गति होगी! चाहे तू कुछ भी कर हम आज रात को, द्वीप के किनारे आकर खाना पकाकर, खाकर ही रहेंगे। जरूरत पड़ी तो कल सवेरे ही फिर यात्रा पर निकल पड़ेंगे।"

यह सुन और खुश हुये। रूपधर ने सोचा कि विधि से बचना असम्भव था। उसने मायावी से कहा—"अगर सबकी यही राय है तो मैं कुछ नहीं कर सकता। पर तुमको यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि यदि तुम गौ या भेड़ देखोगे तो उनको छुओगे तक नहीं। हममें से किसी को भी गौ या भेड़ को मारने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। हमें सुकेशिनी के दिये हुए भोजन के अतिरिक्त कुछ नहीं छूना चाहिए। अगर तुमने यह प्रतिज्ञा की तो तुम्हारे उस द्वीप में उतरने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

सबने इस प्रकार की प्रतिज्ञा की।

(अभी और है)

[४]

[मोरोक्का का जादूगर अलादीन को गुफ़ा में छोड़ गया था। पर अलादीन उसकी दी हुई अंगूठी के भूत की मदद से घर चला आया था। अद्भुत दीप के भूत ने उसको बड़े बड़े चान्दी के थालों में, महाराजाओं के योग्य भोजन लाकर दिया। थालों की चान्दी बेचकर अलादीन अमीर होने लगा। वह यह भी जान गया कि गुफ़ा में से जो रत्न वह लाया था, वे बहुमूल्य थे। इतने में राजकुमारी बुदूर को एक दिन देखकर वह उससे प्रेम करने लगा।]

अलादीन जब घर पहुँचा तो उसकी हालत ऐसी थी मानों वह इस दुनियाँ में ही न हो। उसका हुलिया देखकर माँ ने घबराकर पूछा—"क्यों बेटा, क्या शक्ल बना रखी है! क्या तबियत ठीक नहीं है!

अलादीन ने माँ को जवाब न दिया। माँ का परोसा हुआ भोजन भी उसने न छुआ।

"बेटा! तुम्हें क्या हो गया है! क्या कोई बीमारी हो गई है! कुछ बताओ तो सही!" माँ ने उसे मनाते हुये पूछा।

"माँ, मुझे न सताओ।" अलादीन ने तंग आकर कहा।

माँ ने भी उसे तबतक न छोड़ा जबतक उसने खाना न खा लिया। फिर वह

बिस्तरे पर पड़ा रात भर न जाने क्या क्या सोचता रहा।

माँ को बेटे का व्यवहार बड़ा विचित्र-सा लगा। उसने उससे कई प्रश्न पूछे, कहा कि हकीम को बुलवायेगी। उससे कुछ दिन पहिले एक अरबी हकीम नगर में आया हुआ था। राजा भी उससे चिकित्सा करवा रहा था।

"माँ, मैं ठीक हूँ। मुझे कोई बीमारी नहीं है। मैं अबतक सोचता था कि सब स्त्रियाँ एक जैसी होती हैं किन्तु कल मैंने राजकुमारी बुदूर को स्नानशाला में देखा, मैं अपनी सुधबुध खो बैठा। उससे जबतक शादी न कर लूँगा तबतक मेरी हालत न सुधरेगी।" अलादीन ने कहा।

यह सुनकर, माँ ने सोचा कि हो न हो उसका लड़का पागल होगया है।

"ये क्या ऊँटपटाँग बातें हैं! क्या तेरी अक्ल मारी गई है! कभी ऐसी बातें न करना।" उसने अपने लड़के को समझाया।

"मुझे कोई पागलपन नहीं है। तू हजार समझा पर मेरा मन न बदलेगा। मैं राजकुमारी से शादी करके ही रहूँगा। राजा के पास जाकर मैं साफ़ साफ़ पूछूँगा कि वे अपनी लड़की की शादी मुझ से करते हैं कि नहीं। मैं आगा पीछा नहीं देखूँगा।" अलादीन ने कहा।

"फिर वही बात। मान भी जाओ, बेटा। राजा से इसतरह की बातें सीधे तौर पर नहीं की जाती। कोई जाकर हमारी तरफ़ से बात करनेवाला तो हो!

"तुम हो न माँ। तुम्हारे सिवाय मेरा और कौन है! इसलिये तुम जाकर मेरे मन की बात राजा से कहो।" अलादीन ने कहा।

"वाह वाह! क्या तेरी तरह मेरी अक्ल भी मारी गई है! तुम्हारा बाप दर्जी था और मैं उस दर्जी की पत्नी हूँ। राजकुमारी से शादी करने के लिए भला तेरा क्या हक है! वे अपने लड़की की शादी किसी राजा महाराजा से करेंगे। हम कहाँ और वे कहाँ! इन बातों में बराबरी देखी जाती है, बेटा।" माँ ने कहा।

"माँ, मैं वह सब नहीं जानता। कुछ भी हो मैंने यह शादी करने का पूरा निश्चय कर लिया है। यह निश्चय नहीं बदलेगा। अगर तुम्हें अपने बेटे पर प्रेम है तो मेरे लिये यह करो—क्यों कि अगर मेरी यह इच्छा पूरी न हुई तो मैं अधिक दिन न जिऊँगा। और मैं हूँ भी तेरा इकलौता।" अलादीन ने कहा।

अलादीन की माँ के आखों में आसूँ छलक आये। "हाँ, बेटा, मैं तेरी माँ हूँ। और तू मेरा इकलौता लड़का है। मेरी भी तो यह ख्वाइश है कि तेरी शादी हो, और तू भी बालबच्चोंवाला बने। इसलिये हमारी बराबरी के घर में तुम्हारी शादी के बारे में बातचीत करूँगी। तब भी अगर दुल्हिन वालों ने पूछा कि तुम्हारा लड़का क्या कर रहा है तो मुझे नहीं मालूम मुझे क्या कहना चाहिये। जब मैं अपने समान के लोगों को ही यह नहीं कह पाती हूँ तो राजा की लड़की को कैसे माँगू, बेटा! कुछ सोचो समझो तो। अगर हमने जाकर कहा भी तो क्या वे हमें जिन्दा रहने देंगे। तुम ही बताओ कि मैं जाकर पूछूँ भी तो कैसे पूछूँ। मैं राजा के सामने कैसे जा सकूँगी! मानो गई भी उनको कुछ न कुछ नजराना देना होगा न! क्या है! फिर तूने राजा का ऐसा कौन-सा उपकार किया है कि हम उनकी लड़की का हाथ माँगे।

"तुम ठीक कह रही हो माँ! तुम पूछ रही हो कि मैंने महाराजा का कौन-सा बड़ा उपकार किया है! मैं उसको बहुमूल्य वस्तु उपहार में दे सकता हूँ। मैं गुफ़ा से जो रत्न लाया था, वे अमूल्य हैं। वैसा एक रत्न भी किसी राजा के पास न होगा। एक थाल ले आ, मैं उन्हें दिखाऊँगा।" अलादीन ने कहा।

रत्नों का प्रकाश देखकर उसकी माँ की आँखें चौंधिया गईं। "इन्हें ले जाकर महाराजा को नजराना दो और उनके दर्शन करो।" अलादीन ने कहा।

"अच्छा, बेटा, यह तो बहुत बड़ा उपहार है। परन्तु जब वे यह पूछेंगे कि क्या चाहिये नहीं मालूम कि मेरे मुँह से बात निकलेगी कि नहीं। अगर मैं कहूँगी कि आप अपनी लड़की की मेरे लड़के से शादी कीजिये तो शायद वे मुझे वहाँ से बाहर करवा दें।—हम दोनों को फाँसी पर चढ़वा दें। फिर भी मैं तेरे लिये सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ। पर जब वे पूछेंगे कि तुम्हारा ओहदा क्या है, तुम्हारी जमीन जायदाद कितनी है, तो मैं क्या जवाब दूँ, बेटा!" माँ ने पूछा।

इस उपहार को लेकर वे इसतरह के प्रश्न न पूछेंगे। अगर पूछें भी तो तेरे मन में जो आये, कह देना। सब साबित करने के लिए हमारे पास अद्भुत दीप है ही।" अलादीन ने कहा।

अगले दिन, अलादीन की माँ, अद्भुत दीप पर भरोसा रखकर राजा का दर्शन करने के लिए तैयार हो गई। रत्नों के थाल पर एक शाल डालकर, वह सवेरे ही राजमहल गई। राजा के दर्शन के लिए तबतक भीड़ न जमा हुई थी। मन्त्रियों व अन्य कर्मचारियों का दरबार हाल में जाना उसको दिखाई दिया। अन्त में राजा आया। सब ने उनका अभिवादन किया। राजा के सिंहासन पर बैठने पर सब यथोचित आसन पर बैठ गये।

पहिले शिकायतों की सुनवाई हुई। किन्तु राजा ने समय के अभाव में कई को दर्शन न दिया। और उनसे जाने के लिए कहा। अलादीन की माँ भी इनमें थीं। वह घर चली गई।

जब अलादीन ने उसके हाथ में थाल देखा तो वह समझ गया कि काम पूरा न हुआ था। उसने अन्दर आकर कहा—

बाद राजा ने उसे देखकर मन्त्री से कहा—"मैं इसे रोज देख रहा हूँ। थाल पर शाल डालकर वह आती है और वहाँ खड़ी हो जाती है। उसको क्या काम है?"

"महाप्रभु, स्त्रियाँ तो कम अक्ल की होती हैं वह अपने पति के या किसी और रिश्तेदार के खिलाफ़ शिकायत करने आयी होगी।" मन्त्री ने कहा।

"इस बार जब वह आये तो मेरे सामने हाजिर करो।" राजा ने कहा।

अगले दिन, अलादीन की माँ दरबार में गई। राजा ने उसको बुलाकर कहा—"तुमको बहुत दिनों से देख रहा हूँ। तुमने कभी सामने आकर मुझ से कुछ न कहा। तुम मुझ से क्या चाहती हो?"

अलादीन की माँ ने राजा को झुककर सलाम किया—"महाप्रभु, अगर मैं कोई खता कर बैठूँ तो मुझे सजा नहीं देंगे, यह अभयदान पहिले मेहरबानी करके दीजिये।" राजा ने हँसकर कहा। "तुम न डरो। दरबार खतम होने दो। फिर तुम्हारी फरियाद सुनूंगा।"

दरबार खतम हुआ। राजा और मन्त्री के अतिरिक्त, सब चले गये। राजा ने

"जैसे तैसे मैं राजदरबार में पहुँची। सच है कि मैं राजा से बातें न कर सकी। परन्तु कई और मेरी तरह थे, जो उनसे बातें न कर सके। खुदा की मेहरबानी हुई तो कल बात कर सकूंगी।"

अलादीन को पहिले तो निराशा हुई। परन्तु माँ की बाद की बातें सुन कर उसका ढाढस बँधा।

अलादीन की माँ अगले दिन गई। पर दरबार हाल बन्द था। दरबार एक दिन छोड़कर, एक दिन लगता था। पर उसने दरबार जाना न छोड़ा। सात दिन

अलादीन की माँ से पूछा—"क्या चाहती हो?"

"अलादीन नाम का मेरा एक लड़का है। उसने एक दिन राजकुमारी को स्नानागार में किवाड़ के पीछे से देखा। तब से वह उससे प्रेम करने लगा। अगर उससे शादी न हुई तो वह मर जायेगा।" अलादीन की माँ ने कहा।

राजा ने हँसकर पूछा—"उस थाल के नीचे क्या है?" अलादीन की माँ ने थाल हटाकर—थाल में रखे रत्नों को, राजा को दिया। उनको देखकर राजा के मुख से बात न निकली। आखिर उसने कहा—"मैंने कभी इतने बड़े रत्न नहीं देखे हैं। मन्त्री! क्या तुमने कभी देखे हैं?"

"नहीं महाराज," मन्त्री ने कहा।

"इसतरह के रत्न भेजनेवाला मेरी लड़की से शादी करने के योग्य नहीं है क्या?" राजा ने पूछा।

मन्त्री कोई जवाब न दे पाया। वह हिचकिचाया। "महाराज! पहिले आपने वचन दे रखा है कि आप अपनी लड़की का मेरे लड़के के साथ विवाह करेंगे। अगर आप मेरे लड़के को तीन महीना का समय दें तो वह इससे भी बड़े रत्न लाकर आपको उपहार में देगा।" मन्त्री ने कहा।

राजा जानता था कि तीन महीने नहीं, अगर तीस साल भी दिये गये तो मन्त्री का लड़का वैसे रत्न नहीं ला सकता था। तो भी उसने मन्त्री की इच्छा के अनुसार तीन महीने की अवधि दे दी।

फिर राजा ने अलादीन की माँ की ओर मुड़कर कहा—"अपने लड़के से कहना की मैं उसको अपना दामाद बना

दूँगा। पर कहना कि तीन महीने तक शादी नहीं हो सकती। क्योंकि शादी की तैयारी के लिये समय चाहिये।

अलादीन की माँ राजा को धन्यवाद देकर घर चली गयी। उसको मुस्कराता देख अलादीन के मन में आशायें उठने लगीं।

"बेटा, राजा ने अपनी लड़की देना स्वीकार कर लिया है। परन्तु मन्त्री ने उनके कान में कुछ कहा। उसके बाद राजा ने विवाह तीन महीने के लिये स्थगित कर दिया। मुझे शक हो रहा है कि मन्त्री विवाह भंग करने के लिये कोई साजिश कर रहा है।" अलादीन की माँ ने कहा।

अलादीन बड़ा खुश हुआ। तीन महीने की अवधि की उसे परवाह न थी।—"माँ, तुमने मरते को जिलाया है।" कहते हुये उसने माँ को खुशी खुशी आलिंगन किया।

एक एक दिन गिनते हुये अलादीन ने दो महीने गुजारे। उसके बाद एक दिन उसकी माँ तेल के लिये बाज़ार गयी। उसको बाज़ार देखते ही अचरज हुआ। दुकानें सब बन्द हो गई थीं। गलियाँ सजाई गई थीं। तोरण बाँधे गये थे। दिये जलाये जा रहे थे। "यह सब किस लिये!" अलादीन की माँ ने तेल की दुकानवाले से पूछा।

"क्या तुम नहीं जानते! आज रात को मन्त्री के लड़के की हुदूर से शादी हो रही है। सारे शहर में जलसे हो रहे हैं।" तेल की दुकानवाले ने कहा।

यह सुनते ही अलादीन की माँ पागल-सी हो गई। यह दुःख खबरी कैसे लड़के को सुनाई जाय, यह सोचती वह घर गई।

(अभी और है)

※ मेंढ़क की चाल ※

भालू को मेंढ़क पर बड़ा गुस्सा आया। उसने सोचा कि जब वह खरगोश का पीछा कर रहा था तो मेंढ़क ने ही उसे गलत रास्ता बताकर धोखा दिया था। उसने उससे बदला लेने की ठानी।

बदला लेने का मौका भी उसे जल्दी मिल गया। एक सप्ताह होने से पहिले मेंढ़क उसे तलैय्या के किनारे सोता दिखाई दिया।

भालू ने अपने हाथ की कुल्हाड़ी नीचे रखी, पीछे जाकर उसने मेंढ़क को अपने पंजे से पकड़ लिया।

मेंढ़क, नींद से उठा और सामने भालू का पा बड़ा चकित हुआ।

"क्यों मेंढ़क, हाल-चाल ठीक है न! बाल-बच्चे सब अच्छे हैं न! अफ़सोस, अब तुम उन्हें न देख पाओगे।" भालू ने कहा।

मेंढ़क न जान सका कि भालू को उस पर क्यों गुस्सा आया था। उसने पूछा— "भालू मामा, क्यों ऐसी बातें कर रहे हो!"

"जब तुमने मुझे देखकर, हँसी मजाक किया था अगर तुम तब आगे की सोचते तो अच्छा होता। अब क्यों बिचारी-सी शक्ल बनाते हो?" भालू ने आँखें दिखाते हुए पूछा।

मेंढ़क को न भालू की बातें समझ में आईं न उसके कहने का तरीका ही— "मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है?" उसने सविनय पूछा।

"क्या तूने नहीं बताया था कि खरगोश उस तरफ़ गया है! तुम मुझसे मखौल करते हो! शायद सोचते थे कि बचकर निकल जाओगे। तुम

श्री सुमन कुमार जोशी

शायद मेरी बात नहीं जानते।" भालू ने कहा।

तब भी मेंढक को भालू की बातें समझ में न आईं। पर यह बात वह जान गया कि भालू उसको मारकर ही रहेगा। इसलिए मेंढक ने वह गलती स्वीकार कर ली, जो उसने न की थी—"मामा! इसबार माफ़ कर दो। फिर ऐसी गलती कभी न करूँगा मामा!" वह भालू को मनाने लगा।

भालू ने गुस्से में दाँत पीसे।

"इस बार तुमने अगर मुझे छोड़ दिया तो तुम्हें मैं बहुत बड़ा शहद का छत्ता दिखाऊँगा, मामा।" मेंढक ने कहा।

भालू को दया न आई। वह यह सोचने लगा कि मेंढक को कैसे मारा जाये। वह पानी में मर नहीं सकता था। आग में डालने से मर तो सकता था पर भालू के पास आग न थी।

भालू की फ़िक्र मेंढक समझ गया। उसने रोना छोड़कर कहा—"मामा। तुमने मुझे मारने का निश्चय किया है। कम से कम मुझे वैसे तो मारो जैसे मैं मरना चाहता हूँ। वह देखो, उस धोबी के पत्थर पर मुझे रखकर अपनी कुल्हाड़ी से मार दो। दलदल में अपने लोगों को देखता, मैं इस दुनियाँ से चला जाऊँगा।"

भालू को भी यह तरीका जँचा। वह मेंढक को पत्थर पर ले गया। मेंढक इधर उधर देखने लगा, जैसे अपने रिश्तेदारों की तलाश कर रहा हो। तब भालू ने अपनी कुल्हाड़ी उठा रखी थी। उसने ज़ोर से कुल्हाड़ी मारी।

कुल्हाड़ी के पड़ने से पहिले मेंढक एक छलाँग में दलदल के बीचों बीच कूदा। पत्थर से लगकर भालू की कुल्हाड़ी खुण्डी हो गई।

पेन्ग्विन

पक्षियों को विशेषज्ञों ने चार मुख्य जातियों में विभक्त किया है। उन चारों में एक पेन्ग्विन है। १५८० में मनुष्य ने पहिली बार पेन्ग्विन पक्षी देखा। ये १७ तरह के होते हैं। ये दक्षिणी ध्रुव में है, अर्थात् भूमध्य रेखा के उत्तर में ये नहीं रहते।

इसका सबूत मिला है कि कई लाख वर्ष पहिले जब हिमालय भूगर्भ में से अपना सिर उठा रहा था, भूमि पर कई जगह पेन्ग्विन थे। उनके अवशेष न्यूज़ीलेन्ड, अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया, आदि देशों में मिले हैं। ये पक्षी पाँच फीट ऊँचे होते थे और करीब २०० पाउन्ड भारी।

लोगों का अक्सर यह ख्याल रहा है कि ये दक्षिणी ध्रुव में ही रहते हैं। पर यह सच नहीं हैं। केवल चार तरह के पेन्ग्विन ही वहाँ रहते हैं। दक्षिण अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, न्यूज़ीलेन्ड, पेसिफ़िक द्वीपों में भी ये पक्षी रहते हैं। इन पेन्ग्विनों में "चक्रवर्ती" पेन्ग्विन सबसे बड़ा है।
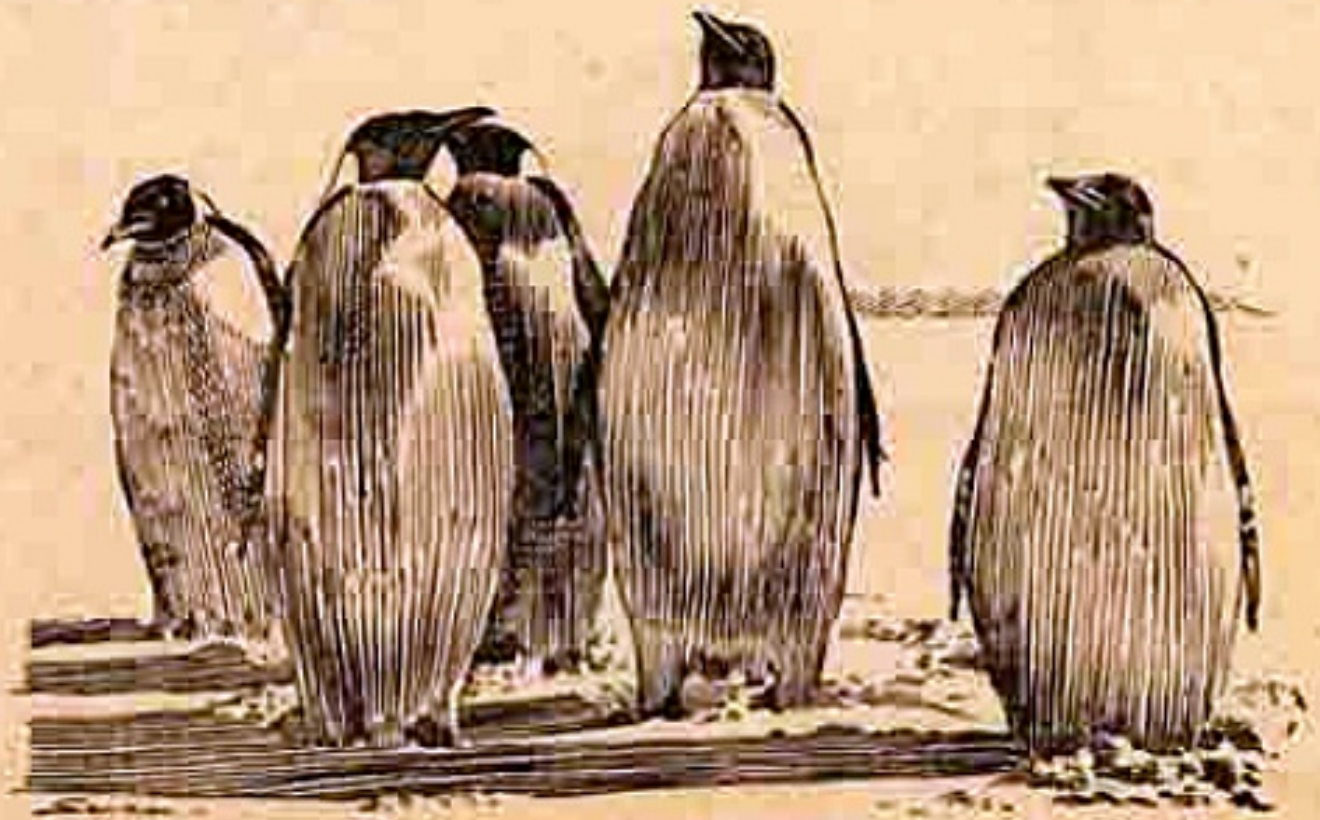
"चक्रवर्ती"

इनका कद चार फ़ीट होता है, और भार सौ पाउन्ड। पर कई की ऊँचाई १५, १६ अंगुल है।

पेन्विन पक्षी उड़ नहीं सकते। उनके पँख बहुत छोटे होते हैं। पर जैसे और उड़ते हैं वैसे ये तैर सकते हैं। वे पानी में एक सेकन्ड में तीस फ़ीट जा सकते हैं। यानि २० मील की घँटे की रफ़्तार से जा सकते हैं।

ये पक्षी उष्ण रक्त प्राणी हैं। उनके शरीर का तापमान १०० डिग्री से अधिक भी रहता है। यह होते हुए भी वे संसार के शीतलतम प्रदेश में रहते हैं। उनका रक्षण उनके शरीर की चरबी करती है।

पेन्विन के पँख ऐसे नहीं होते कि वे उनके सहारे उड़ सकें, वे चप्पू की तरह होते हैं, ताकि वे तैर सकें, पर ये भी चिड़िया, मुर्गी, बत्तखों की तरह पँखों में चोंच रखकर सोते हैं। जब बर्फ़ में चलना होता है, तो ये अपने पेट के बल आगे को धकेलते चलते हैं।

पेन्विन पानी के तह में जाकर अपना आहार खोजते हैं। ये पानी में से बड़ी तेजी से उड़ते हैं और एक ही उड़ान में किनारे पर आ जाते हैं। इस सिलसिले में वे एक अजीब काम करते हैं। पानी में कूदने से पहिले वे पत्थरों को निगलते हैं और पानी से बाहर आने पर उनको उगलते हैं। शायद इन पत्थरों के कारण उनके शरीर का भार बढ़ जाता है और वे तह में जल्दी

"नमस्ते! नमस्ते!"

जा सकते हैं। जलचर ही पेन्ग्विन के आहार हैं। जब जलचर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को जाते हैं, तो उनके साथ पेन्ग्विन भी जाते हैं। ये पक्षी संघ जीवी हैं। झुण्डों में रहते हैं उनका अपना अलग नियन्त्रण है।

मादा पेन्ग्विन, एक समय में एक ही अंडा देती है। पर उसको सेना नर पेन्ग्विन का काम है। मादा अंडा देकर नर को सौंप देती है, और आहार की तालाश में निकल पड़ती है। तब नर पक्षी एक जगह खड़ा हो जाता है और अपने पैरों पर उसको रखकर सेता है। मादा पक्षी दो महीने तक वापिस नहीं आती। तबतक नरपक्षी कुछ नहीं खाता। अंडे को मादा पक्षी को सौंप कर वह खाने पीने को निकलता है।

सौ में १५ पेन्ग्विन बच्चे मर मरा जाते हैं। इसलिए पेन्ग्विनों में बच्चे कम हैं। यही कारण है कि बड़े पेन्ग्विनों को बच्चों पर बड़ा मोह रहता है। उनको प्यार करने के लिए वे आपस में अक्सर लड़ते-भिड़ते भी हैं। इस लड़ाई झगड़े में बच्चे भी मारे जाते हैं। पेन्ग्विन पक्षी हमेशा बक बक करते रहते हैं। पेन्ग्विन इतना शोर करते हैं कि तीस मील पर भी उनका कोलाहल सुनाई

बर्फ़ पर पेट के बल चलते...

पड़ता है। यह शोर दिन-रात चलता रहता है। जब पुराने पंख झड़ते हैं और नये आते हैं तब पेन्विन पक्षी एक मास एक जगह खड़ा रहता है। न कुछ खाता है, न पीता है। नहाता धोता भी नहीं। ये पक्षी अक्लमन्द नहीं होते। उनमें दूर दृष्टि नहीं होती। सुनते हैं, जब एक पक्षीके पास सेने के लिए अंडा न रहा तो वह एक डिब्बा ही सेने लगा। परन्तु ये पक्षी बहुत बलवान होते हैं। एक "चक्रवर्ती" पक्षी पाँच आदमियों का एक साथ मुकाबला कर सकता है।

अपने नैसर्गिक वातावरण में पेन्विन ३५ साल तक जीता है। मगर बन्दिगी में वे इतने साल नही जीते। पेन्विन पक्षी बड़े गुसैल होते हैं। जब वे गुस्से में नही होते तो वे पूरे भद्र पुरुष की तरह रहते है। जब दो झुण्ड मिलते हैं, तो वे सिर झुका कर अभिवादन करते हैं। फिर बातचीत करते हैं। "सम्भाषण" के बाद अपनी चोंचें ऊपर करके "विदा" सूचित करते हैं।

दक्षिणी-ध्रुव में तिमिंगल मछली पकड़ने कुछ लोग गये। उनके रहने की जगह एक "चक्रवर्ती" पेन्विनों का झुन्ड शान से चलता आया। फिर उनमें से एक सामने आया। सिर नीचा करके ऊपर किया। पाँच मिनिट, बक बक की। और फिर इसतरह चला गया, जैसे वह पूछ रहा हो "कुछ समझ में आया कि नहीं!"

इस पक्षी के बारे में इस तरह की घटनायें कितनी ही कही सुनी जाती हैं।

पानी की तह से ऊपर उठता...

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९५८ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, जनवरी '५८ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जनवरी - प्रतियोगिता - फल

जनवरी के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो :
स्वाधीनता के प्रतीक

दूसरा फ़ोटो :
पराधीनता की एक झलक

प्रेषिका : **कुमारी प्रशीला सिंह**
C/o श्रीमती एम. सिंह, २१/१. पुना पार्क, दफ्तरी रोड, मालाड, बम्बई।

चित्र - कथा

एक दिन दास और वास "टाइगर" को साथ लेकर एक नारियल के बाग की ओर टहलने निकले। जब वे पास गये तो बाग का माली एक आदमी के पीछे चिल्लाता भाग रहा था, वह नारियल चुरा कर ले जा रहा था। चोर पेड़ों के पीछे कहीं गायब होगया, दास, वास जब वहाँ गये तो उन्हें वहाँ सींग दिखाई दिये। इस बीच "टाइगर" पीछे से जाकर उस पर कूदा। वह आदमी बाहर आया। सबने मिल कर उसे पकड़ लिया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press(Private) Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26.—Controlling Editor : SRI 'CHAKRAPANI'

अधिक खतरनाक बीमारी होनेके पहले ही बच्चे के सर्दी-जुकाम को दूर कीजिये

रातोंरात इस गुणकारी प्रसिद्ध औषधि द्वारा उसके गले, नाक व छाती के दर्द का अन्त कीजिये।

जब भी बच्चे को सर्दी-जुकाम हो आप तब ज़रा भी देर न कीजिये . . . सोते समय उस की छाती, गले व पीठ पर विक्स-वेपोरब मल दीजिये। बच्चा, सर्दी जुकाम की तकलीफों से जहाँ दर्द हो रहा है, आराम पायेगा और रात ही रात में, जब आपका बच्चा सुख की नींद सोयेगा, विक्स वेपोरब उसे सर्दी-जुकाम से छुटकारा दिलायेगा। सुबह होने तक बच्चा स्वस्थ हो जायगा।

२ तरह से आराम पहुंचाता है

१

वह नाक के जरिए असर करता है

विक्स वेपोरब की तेज औषधीय भाप सूंघने से आपके बच्चे के नाक व गले के सर्दी-जुकाम के विकार मिट जाते हैं।

२

वह त्वचा के जरिए असर करता है

आपके बच्चे की छाती में दर्द भी नहीं रहता क्योंकि विक्स वेपोरब त्वचा के जरिए पुल्टिस जैसी गर्मी पहुंचाता है।

छाती, गले व पीठ पर मलिये।

आज ही विक्स वेपोरब का इस्तेमाल कीजिये।

नयी कम कीमत डिबिया की कीमत सिर्फ ४० नये पैसे + टॅक्स

...तो

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर

दीजिये
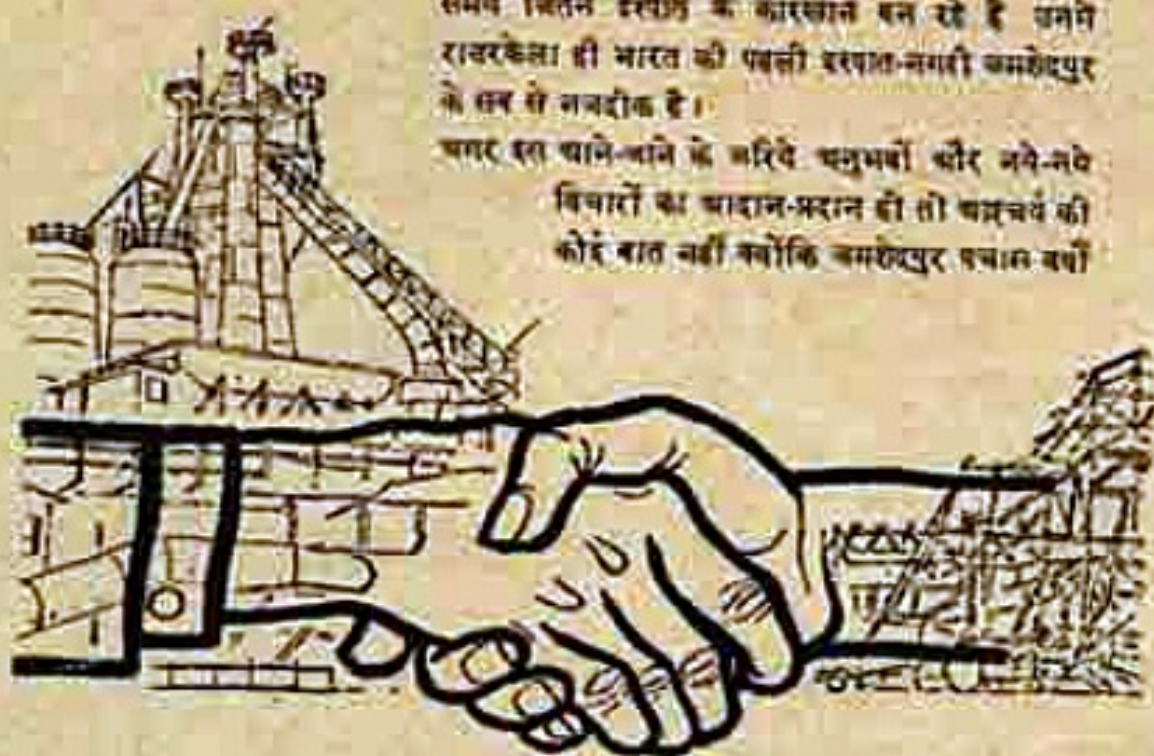
जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४०-पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाइल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगाने के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक
मार्क को अवश्य देखें।

यह मॅनर्स उत्पादन
का प्रमाण है।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY - DELHI - CALCUTTA - MADRAS.

ASP/GH6

Photo by Ravinder Kumar Paul

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

पराधीनता की एक झलक

प्रेषिका :
कुमारी प्रमीला सिंह, बम्बई

रूपधर की यात्राएँ